अगाथा क्रिस्टी

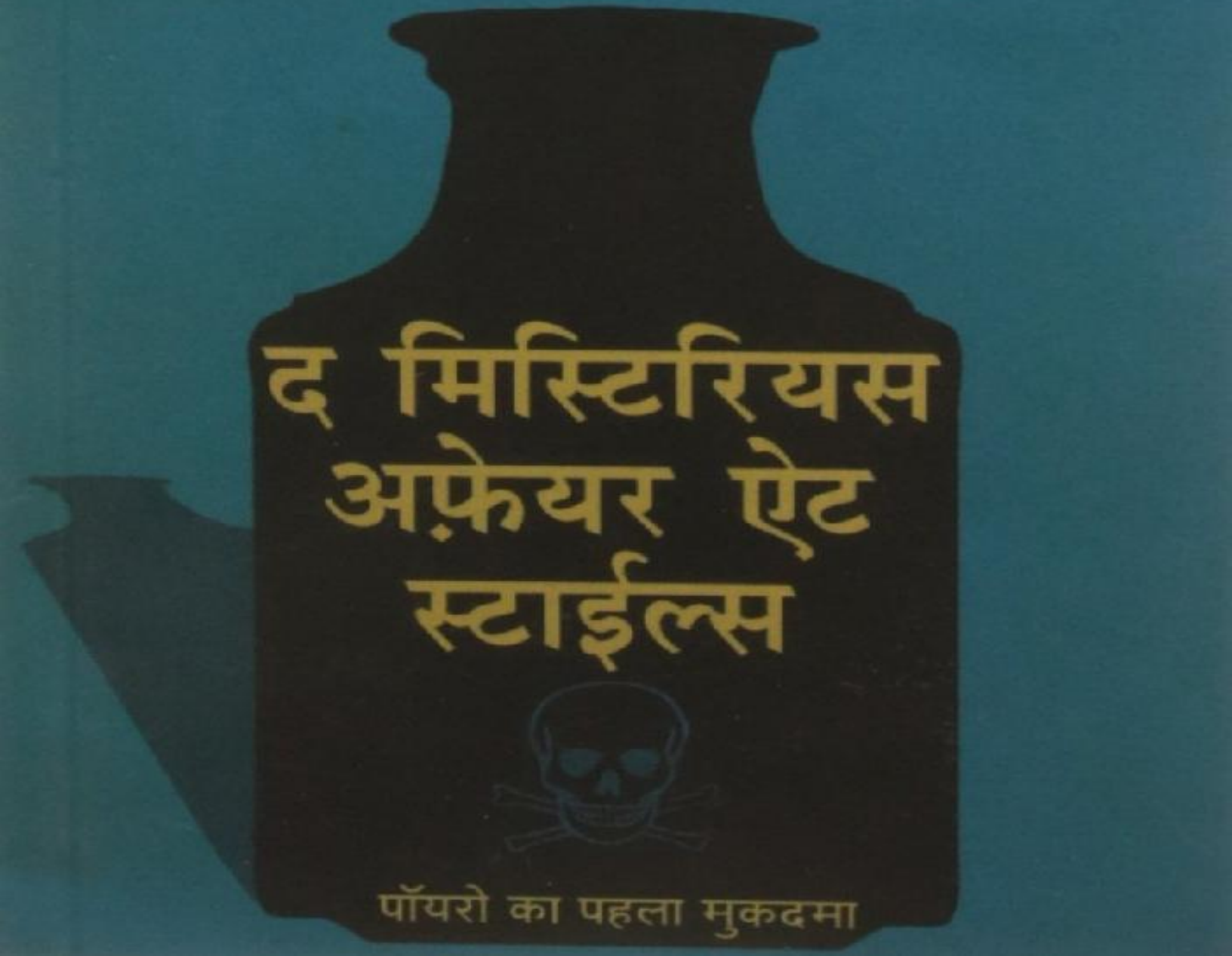

द मिस्टिरियस अफ़ेयर ऐट स्टाईलस

पॉयरो का पहला मुकदमा

द मिस्टिरियस अफ़ेयर ऐट स्टाईल्स

पॉयरो का पहला मुकदमा

अगाथा क्रिस्टी

अनुवाद

उमा पाठक

हार्परकॉलिंस पब्लिशर्स इंडिया

मेरी माँ को

अनुवादक की कलम से

अगाथा क्रिस्टी का नाम काफ़ी सुना था, लेकिन पढ़ने की कोशिश कभी नहीं की थी। हमारे समय की परंपरा के मुताबिक मैंने भी क्लासिक उपन्यासों से पढ़ने की शुरुआत की। ज्यों-ज्यों बड़ी हुई, हिंदी के अलावा बांग्ला और अंग्रेज़ी के उपन्यास पढ़े। हत्या आदि से जुड़े जासूसी उपन्यासों में कभी रुचि नहीं रही थी। जब मीनाक्षी ठाकुर ने इस उपन्यास के अनुवाद का सुझाव दिया तो मैं पहले तो हिचकिचाई, लेकिन अब मैं उनकी बहुत शुक्रगुज़ार हूं। उम्र के इस पड़ाव पर आकर मन का भ्रम टूटा कि जासूसी उपन्यास रोचक नहीं होते।

अनुवाद करते समय इसके विषय में जिज्ञासा जागी और जो जानकारी मिली, वो मैं पाठकों के साथ बाँटने का लोभ रोक नहीं पाई। अगाथा क्रिस्टी ने इससे पहले कोई किताब नहीं लिखी थी। ये उपन्यास उस शर्त का परिणाम है जो एक जासूसी उपन्यास को लिखने की थी, जिसमें एक हत्या से जुड़े सारे सुरागों के होते हुए भी पाठक हत्यारे के बारे में नहीं जान पाता। उपन्यास के अंत में जासूस ही उस गुत्थी को सुलझाता है। अगाथा ने पॉयरो नाम के एक बेल्जियन जासूस की सृष्टि की। वह शरलॉक होम्स के बाद सबसे ज़्यादा लोकप्रिय जासूस साबित हुआ। लेखिका ने न सिर्फ शर्त जीती बल्कि सबसे ज़्यादा बिकने वाली किताबों की लेखिका होने का ख़िताब भी जीता।

'द मिस्टिरियस अफ़ेयर ऑफ़ स्टाईल्स' उपन्यास प्रथम विश्वयुद्ध की पृष्ठभूमि में लिखा गया। हेस्टिंग्स की ज़ुबानी ये कहानी सुनाई गई है। लेखिका की वर्णन क्षमता अद्भुत है। व्यक्ति का रुपाकार ही नहीं, हावभाव भी इस सूक्ष्मता ले उकेरे गए हैं कि सब कुछ आँखों के सामने साकार हो जाता है। कहानी सरल और प्रवाहपूर्ण भाषा में है, मन कभी भी ऊबता नहीं है। लेखिका पाठकों की ख़ातिर हत्यारे की खोज में नए-नए संदेहों का जाल बुनती रहती है।

इस उपन्यास को अनेक माध्यमों में प्रस्तुत किया गया है। यूके के एक टीवी चैनल ने 16 सितंबर 1990 में लेखिका के शताब्दी समारोह के उपलक्ष्य में अगाथा क्रिस्टी का पॉयरो नाम से 103 मिनट के नाटक के रूप में श्रृंखलाबद्ध कर दिखाया गया था। इसमें उपन्यास के साथ पूरा न्याय किया गया है। लेकिन कुछ गौण पात्रों, जैसे डॉ बॉयरस्टीन, को छोड़ दिया गया है।

2005 में बीबीसी रेडियो पर इस उपन्यास को पाँच भागों में धारावाहिक के रूप में प्रस्तुत किया गया है। पाँचों भाग 5 सितंबर से 3 अक्टूबर तक हर सोमवार को प्रसारित हुए।

13 फरवरी 2012 में ग्रेट लेक्स थिएटर ने अपने शिक्षा प्रोग्राम के अंतर्गत 65 मिनट का मंच रुपांतरण किया। उसमें तीन पुरुषों और दो औरतों ने एक से ज़्यादा भूमिकाएं अदा कीं। पेंग्विन बुक्स ने 30 जुलाई 1935 को पहली दस पुस्तकों में इसे छापकर प्रकाशन का इतिहास बनाया। इस उपन्यास की बेजोड़ विशिष्टता ये है कि द टाइम्स ने साप्ताहिक संस्करण में धारावाहिक के रूप में इसे छापा।

ऐसी रचना के साथ जुड़ना मैं अपना सौभाग्य समझती हूँ। उम्मीद है कि पाठकों को भी पढ़ने में उतना ही आनन्द आये जितना मुझे आया था। इसके लिए मैं एक बार फिर मीनाक्षी की आभारी हूँ।

उमा पाठक

पहला अध्याय

मैं स्टाईल्स पहुँचा

उन दिनों ‘स्टाईल्स केस’ से आम लोगों में जगी तीव्र दिलचस्पी अब कुछ दब गयी थी। फिर भी, दुनिया भर में हुई बदनामी को मद्देनज़र रखते हुए मेरे मित्र पॉयरो और ख़ुद उस परिवार ने मुझसे पूरी कहानी का ब्यौरेवार वर्णन लिखने को कहा। हमें विश्वास है कि अब तक फैली सनसनीखेज़ अफ़वाहें इससे प्रभावपूर्ण रूप में दब जायेंगी।

इसलिए मैं संक्षेप में इस मामले से जोड़ने वाले हालातों के कारण बताऊँगा।

रोग के कारण मुझे मोर्चे से लौटा दिया गया था; कुछ महीने स्वास्थ्य लाभ-केन्द्र के उदास वातावरण में बिताने के बाद मुझे एक महीने की छुट्टी मिल गयी। अपना कोई निकट-सम्बन्धी या मित्र न होने के कारण मैं यह सोच रहा था कि क्या करूँ, तभी मेरी मुलाकात जॉन कैवेन्डिश से हो गयी। कुछ सालों से मेरी उससे बहुत कम भेंट हुई थी। वैसे भी, मेरी उससे कभी ख़ास पहचान नहीं थी। वैसे तो वह मुझसे पन्द्रह साल बड़ा था, हालाँकि पैंतालीस का लगता नहीं था; फिर भी बचपन में मैं ऐसेक्स स्थित उसकी माँ के घर स्टाईल्स में बहुत बार रहने जाता था।

हम पुराने दिनों की कहानियों के बारे में बातें करते रहे, आख़िर में उसने मुझे ‘स्टाईल्स’ में छुट्टी बिताने का आमन्त्रण दिया।

उसने यह भी जोड़ा कि ‘माँ इतने साल बाद तुम्हें देखकर ख़ुश होंगी।’

मैंने पूछा, ‘तुम्हारी माँ ठीक हैं?’

‘ओह, हाँ! मेरे ख़्याल से तुम जानते होगे कि उन्होंने फिर से शादी कर ली है?’

मैंने अपना ताज्जुब साफ़ तौर पर ज़ाहिर कर दिया। मिसेज़ कैवेन्डिश ने दूसरी शादी जॉन के दो बेटों वाले विधुर पिता से की थी। जहाँ तक मुझे याद है, वे अपनी अधेड़ अवस्था में भी अच्छी दिखती थीं। अब वे निश्चित रूप से सत्तर से एक दिन भी कम नहीं होंगी। मुझे वे एक कर्मठ, स्वेच्छाचारी व्यक्तित्व की, थोड़ी परोपकारी और सामाजिक प्रसिद्धि के प्रति झुकाव वाली महिला के रूप में याद थीं। उन्हें बाजारों के उद्घाटन और उदार महिला की भूमिका निभाने का शौक़ था। वे बहुत दानशील थीं और उनके पास अपनी अच्छी ख़ासी दौलत थी।

शादी के बाद के शुरुआती दिनों में मिस्टर कैवेन्डिश ने 'स्टाईल्स कोर्ट' नाम का एक देशी घर खरीदा था। वे पूरी तरह अपनी पत्नी के प्रभुत्व के नीचे थे, यहाँ तक कि अपने मरने के बाद पत्नी के लिए घर और आय का बड़ा हिस्सा सौंप गये थे। ज़ाहिर है, यह व्यवस्था दोनों बेटों के प्रति अन्यायपूर्ण थी। पर उनकी सौतेली माँ उनके प्रति बहुत उदार थीं; वैसे भी पिता की दूसरी शादी के वक़्त वे इतने छोटे थे कि हमेशा उन्हें ही अपनी माँ समझते रहे थे।

छोटा बेटा लॉरेंस बचपन से ही नाज़ुक था। उसने डॉक्टरी पढ़ी ज़रूर थी, पर उस पेशे को जल्दी ही छोड़ दिया था। वह घर पर रहकर अपनी साहित्यिक महत्वाकांक्षा पूरी करना चाहता था; हालाँकि उसकी कविताओं को भी अच्छी सफलता नहीं मिली।

जॉन ने कुछ समय बैरिस्टरी की, पर अन्त में देहाती ज़मींदार की आरामदेह ज़िन्दगी अपना ली। दो साल पहले शादी की और अपनी पत्नी को लेकर 'स्टाईल्स' में रहने लगा। पर मेरे मन में यह तीव्र सन्देह था कि अगर उसकी माँ उसका भत्ता बढ़ा देतीं तो वह अपना अलग घर लेना चाहता। जो भी हो, मिसेज़ कैवेन्डिश एक ऐसी महिला थीं, जो अपनी योजनाएँ ख़ुद बनाना पसन्द करती थीं, और उम्मीद करती थीं कि दूसरे उन्हें मानकर चलें। इस मामले में निश्चित रूप से उनके हाथ में चाबुक थी, जिसका नाम था : बटुए की डोरी।

जॉन ने अपनी माँ की दूसरी शादी की ख़बर पर मेरा ताज्जुब देखा, तो कुछ उदासी से मुस्करा दिया।

वह नाराज़ होकर बोला, 'वह सड़ा हुआ, उछलने वाला आदमी है। हेस्टिंग्स, इस सबसे हमारी ज़िन्दगी बहुत मुश्किल हो गयी है। जहाँ तक ऐवी का सवाल है—तुम्हें ऐवी याद है?'

‘नहीं।’

‘ओह, मेरे ख़्याल से वह तुम्हारे बाद आयी थी। वह माँ का सब काम करने वाली, उनकी साथिन थी, हरफ़नमौला। ऐवी बड़ी मनोरंजक है। बेशक़ कम उम्र की और सुन्दर नहीं है, पर जैसे उत्साही लोग होते हैं, वैसी है।’

‘तुम कहने वाले थे—’

‘ओह! यह आदमी, वह न जाने कहाँ से ऐवी का दूर का रिश्ते का भाई या कोई बनकर यहाँ आ गया, हालाँकि वह इस रिश्ते को मानने के लिए ख़ास उत्सुक नहीं लग रही थी। वह पूरी तरह से बाहर का व्यक्ति है, कोई भी यह देख सकता है। उसकी बड़ी-सी काली दाढ़ी है, वह हर मौसम में चमड़े के जूते पहने रहता है। पर माँ फ़ौरन उसकी तरफ़ आकर्षित हो गयी, उसे सेक्रेटरी बना लिया—तुम जानते ही हो कि वे कैसे सैकड़ों संस्थाएँ चलाती रही हैं?’

मैंने सिर हिलाया।

‘बल्कि युद्ध काल ने उन सैकड़ों को हज़ारों में बदल दिया है। बेशक़ वह आदमी उनके काम आ रहा था; पर जब तीन महीने पहले उन्होंने अचानक यह घोषणा की कि उन्होंने एल्फ्रेड से सगाई कर ली है, तो तुम हम सबको तिनके से गिरा सकते थे। वह आदमी उनसे कम से कम बीस साल छोटा था। यह सिर्फ़ खुले तौर पर दौलत के लिए था; पर तुम तो जानते ही हो—वह अपनी मालकिन ख़ुद हैं, उन्होंने उससे शादी कर ली।’

‘तुम सबके लिए वह बड़ी मुश्किल घड़ी रही होगी।’

‘मुश्किल! निन्दनीय स्थिति थी।’

इस तरह हुआ ये कि तीन दिन बाद मैं ट्रेन से स्टाईल्स सेंट मेरी स्टेशन पर उतरा, एक बेतुका छोटा-सा स्टेशन, जिसके होने की कोई ख़ास वजह नहीं थी, जो हरे खेतों और कस्बे की गलियों के बीच बना था। जॉन कैवेन्डिश स्टेशन पर मौजूद था, मुझे कार तक ले गया।

वह बोला, 'इसमें अब पेट्रोल की एक-दो बूँदें बची होंगी, इसकी वजह माँ की गतिविधियाँ हैं।

स्टाईल्स सेंट मेरी का गाँव उस छोटे-से स्टेशन से लगभग दो मील दूर है और स्टाईल्स कोर्ट उससे दूसरी तरफ़ एक मील की दूरी पर है। वह जुलाई की शुरुआत का एक ख़ामोश गरम दिन था। ऐसेक्स के देशी सपाट इलाके को दोपहर की धूप में इतना हरा-भरा और शान्त पड़ा देखकर किसी के लिए भी यह सोचना करीब-करीब नामुमकिन था कि पास ही एक बड़ा युद्ध अपने निश्चित रास्ते पर चल रहा था। मुझे लगा जैसे मैं अचानक दूसरी दुनिया में भटक गया हूँ। लॉज के फाटक में घुसते वक़्त जॉन बोला : 'हेस्टिंग्स, मुझे डर है कि तुम्हें यहाँ बेहद सन्नाटा लगेगा।'

'मेरे प्रिय दोस्त, मुझे सिर्फ़ यही तो चाहिए।'

'ओह, अगर तुम खाली जीवन बिताना चाहो तो यहाँ काफ़ी अच्छा लगेगा। मैं हफ़्ते में दो बार स्वयंसेवकों के साथ कसरत करता हूँ और खेतों पर मदद करता हूँ। मेरी पत्नी नियमित रूप से घर के काम करती है। वह हर सुबह पाँच बजे उठकर दूध दुहती है और दोपहर के भोजन तक लगातार लगी रहती है। हर तरह से देखो तो जीवन काफ़ी अच्छा है—सिवाय उस आदमी एल्फ्रेड इंग्लथोर्प के!' अचानक उसने कार को, फिर घड़ी को देखा और बोला, 'मैं सोच रहा था कि हमारे पास सिंथिया को लाने का वक़्त होगा या नहीं। नहीं, अब तक तो वह अस्पताल से चल चुकी होगी।'

'सिंथिया! वह तुम्हारी पत्नी तो नहीं है?'

'नहीं, वह मेरी माँ की आश्रिता है। वह उनकी स्कूल की सहेली की बेटी है, जिसने एक बदमाश सॉलिसिटर से शादी कर ली थी। वह हिस्सेदार श्रमिक रह गया था, नतीजा यह हुआ कि लड़की गरीब और अनाथ रह गयी। मेरी माँ उसकी मदद के लिए बढ़ीं, अब लगभग दो साल से वह हमारे साथ रह रही है। वह टैडमिन्स्टर के रेडक्रास अस्पताल में काम करती है।'

आख़िरी शब्दों को कहने के साथ उसने उस सुन्दर, पुराने घर के सामने कार रोक दी। हमारे पहुँचने पर ट्वीड की स्कर्ट में एक महिला जो फूलों की क्यारी पर झुकी हुई थी, सीधी हुई।

‘हलो ऐवी! ये रहा हमारा घायल हीरो! मि. हेस्टिंग्स, मिस हॉवर्ड।’

मिस हॉवर्ड ने बड़े जोश से तकरीबन दर्दनाक पकड़ के साथ हाथ मिलाया। मुझे धूप से तांबई चेहरे पर गहरी नीली आँखें दिखीं। वह चालीस के करीब उम्र की हँसमुख महिला थी, उसकी आवाज़ गहरी, लगभग आदमियों जैसी बुलन्द थी। शरीर बड़ा, चौकोर पर संवेदनशील दिखता था, शरीर से मेल खाते पैर थे जो अच्छे मोटे जूतों में थे। मैंने जल्दी ही जान लिया कि उसकी बातचीत टेलीग्राम की-सी शैली में थी।

‘खर-पतवार ऐसे बढ़ती है जैसे घर में लगी आग। उनसे बराबरी नहीं की जा सकती। तुम्हें साथ देना होगा, बेहतर होगा कि ध्यान रखो।’

मैंने जवाब दिया, ‘मैं काम आ सका तो ज़रूर ख़ुश होऊँगा।’

‘कहो मत। कोई नहीं होता। बाद में सोचोगे, काश ऐसा न कहा होता।’

जॉन हँसते हुए बोला, ‘ऐवी, तुम सनकी हो। आज चाय कहाँ मिलेगी—अन्दर या बाहर?’

‘बाहर। इतना अच्छा दिन घर में घुसने के लिए नहीं है।’

‘तो फिर आ जाओ, आज के लिए तुमने काफ़ी बाग़बानी कर ली। तुम जानती हो मज़दूर ने एक दिन के हिसाब से काफ़ी काम कर लिया। आओ, ताज़ी हो जाओ।’

मिस हॉवर्ड ने बाग़बानी के दस्ताने उतारते हुए कहा, ‘अच्छा, मैं तुमसे सहमत हूँ।

वह घर का चक्कर लगवाकर एक बड़े गूलर के पेड़ के नीचे ले गयी, जहाँ चाय की मेज़ तैयार थी।

बेंत की कुर्सियों में से एक पर से उठकर एक आकृति कुछ कदम चलती हुई हमारी तरफ़ आयी।

जॉन ने कहा, 'हेस्टिंग्स, मेरी पत्नी।'

मैं मेरी कैवेन्डिश की वह पहली झलक कभी नहीं भूलूँगा। उसकी लम्बी, पतली काया तेज़ रोशनी के सामने थी; उसकी हल्के रंग की सुन्दर आँखों में सोती आग का भाव स्पष्ट था, वह ख़ास तौर पर मेरी जानने वाली किसी भी औरत से भिन्न थी; उसकी ख़ामोशी में प्रचण्ड शक्ति थी, जो एक सभ्य, उत्तम देह में छिपी तीव्र बेलगाम आत्मा का प्रभाव देती थी—ये सब बातें मेरी याद में दर्ज़ रहेंगी। मैं उन्हें कभी नहीं भूल पाऊँगा।

उसने अपनी धीमी स्पष्ट आवाज़ में कुछ मधुर शब्दों से मेरा स्वागत करते हुए अभिनन्दन किया। मैं जॉन के निमन्त्रण को स्वीकार करने की खुशी की भावना के साथ एक बेंत की कुर्सी पर बैठ गया। मिसेज़ कैवेन्डिश ने मुझे चाय दी, उसकी कुछ शान्त टिप्पणियों ने मेरे मन पर पड़े पहले प्रभाव को और बढ़ा दिया। मुझे वह पूरी तरह एक सम्मोहक महिला लगी। एक प्रशंसक श्रोता हमेशा उत्साहवर्धक होता है। मैं मज़ाकिया ढंग से स्वास्थ्य लाभ केन्द्र के अपने कुछ क़िस्सों को ऐसे सुना रहा था कि मेरी मेज़बान बहुत ख़ुश हो रही थी और मैं इससे सन्तुष्ट था। जॉन हालाँकि भला आदमी था, पर प्रभावशाली, संवाद-पटु व्यक्ति नहीं कहा जा सकता था।

उसी वक़्त पास की खुली खिड़की से एक आवाज़ सुनाई दी : तो एल्फ्रेड, तुम चाय के बाद प्रिन्सेस को लिखोगे? मैं दूसरे दिन के लिए लेडी टैडमिन्स्टर को ख़ुद लिख दूँगी। या हम प्रिन्सेस के जवाब तक रुक जायें? उनके मना करने पर हो सकता है कि लेडी टैडमिन्स्टर पहले दिन का उद्घाटन कर दें, और मिसेज़ क्रॉस्बी दूसरे दिन आ जायें। स्कूल के मेले के लिए डचेस हैं।

एक आदमी की फुसफुसाहट सुनाई दी, और फिर जवाब में मिसेज़ इंग्लथोर्प की आवाज़ उठी।

‘हाँ, ज़रूर। चाय के बाद ठीक रहेगा। प्रिय एल्फ्रेड, तुम कितना ध्यान रखते हो।’

फ्रेंच खिड़की थोड़ी और खुली और एक सुन्दर, सफ़ेद बालों वाली बुज़ुर्ग महिला लॉन पर आयी, उनके नैन-नक़्श कुछ प्रभुतापूर्ण लग रहे थे।

उनके पीछे एक आदमी आया, जिसका आचरण आदरपूर्ण लग रहा था।

मिसेज़ इंग्लथोर्प ने गर्मजोशी से मेरा स्वागत किया।

‘मि. हेस्टिंग्स, इतने साल बाद तुम्हें देखने से कितनी खुशी हो रही है! मि. हेस्टिंग्स—एल्फ्रेड डार्लिंग, मि. हेस्टिंग्स—मेरे पति।

मैंने कुछ उत्सुकता के साथ ‘एल्फ्रेड डार्लिंग’ को देखा। वह निश्चित रूप से एक अलग संकेत दे रहा था। मुझे उसकी दाढ़ी के बारे में जॉन के एतराज़ पर ताज्जुब नहीं हुआ। मेरी जानकारी में इतनी लम्बी और काली दाढ़ी नहीं दिखी थी। उसने सुनहरी किनारों वाला नाक-पकड़ चश्मा पहना हुआ था, उसकी प्रकृति में एक अजीब भावशून्यता दिख रही थी। मुझे ऐसा लगा कि वह मंच पर ज़्यादा स्वाभाविक लग सकता था, पर असल जीवन में अजीब ढंग से असहज दिखता था। उसकी अवाज़ गहरी और चापलूसी भरी लग रही थी। उसने लकड़ी का-सा अपना हाथ मेरे हाथ पर रखा और बोला:

‘मि. हेस्टिंग्स, खुशी हुई।’ फिर अपनी पत्नी की तरफ़ घूम कर बोला, ‘प्रिय ऐमिली, मेरे ख़्याल से वह गद्दी थोड़ी गीली है।’

जब उसने बहुत कोमलता से, ध्यानपूर्वक, दिखावे के साथ उस गद्दी की जगह दूसरी गद्दी रखी, तो वह उसकी तरफ़ स्नेह से देखते हुए मुस्कराई। वैसे इतनी समझदार औरत को कैसा अजीब सम्मोहन था!

मि. इंग्लथोर्प की उपस्थिति की वजह से वहाँ बैठे लोगों में एक तरह का नियन्त्रण और गुप्त विद्वेष-सा बैठ गया। ख़ास तौर पर मिस हॉवर्ड ने अपनी भावनाओं को छिपाने की तकलीफ़

नहीं उठाई। फिर भी मिसेज़ इंग्लथोर्प को कुछ भी अस्वाभाविक नहीं लग रहा था। पहले से मुझे याद उनकी वाचालता में बीच के सालों की वजह से कोई कमी नहीं आयी थी, और वे बातचीत का निरन्तर प्रवाह जारी रखे थीं, मुख्य विषय आने वाला बाज़ार था, जिसका आयोजन वे कर रही थीं और जो जल्दी ही आने वाला था। बीच-बीच में वे अपने पति से दिन या तारीख़ के बारे में प्रश्न करती जाती थीं। उस आदमी का सतर्क और एकाग्र व्यवहार बिल्कुल नहीं बदल रहा था। शुरू से ही मेरे मन में उसके प्रति पक्की और गहरी नापसन्दगी जम गयी। मैं अपनी तारीफ़ करूँगा कि मेरा पहला फ़ैसला सामान्य तौर पर पूरी तरह सही होता है।

जिस समय मिसेज़ इंग्लथोर्प ऐवेलिन हॉवर्ड को पत्रों के बारे में हिदायत देने को मुड़ीं तो उनके पति ने मुझे सम्बोधित किया: 'मि. हेस्टिंग्स, क्या फ़ौज में नौकरी आपका नियमित पेशा है?'

'नहीं, लड़ाई से पहले मैं लॉयड्स में था।'

'लड़ाई के बाद आप वहीं लौट जायेंगे?'

'शायद। नहीं तो कोई नयी शुरुआत करूँगा।'

मेरी कैवेन्डिश आगे झुकी।

'अगर तुम सिर्फ़ अपने झुकाव के अनुसार चुन सकते तो कौन-सा पेशा चुनते?'

'वह निर्भर करता—'

उसने पूछा, 'कोई गुप्त शौक़ नहीं है? मुझे बताओ—तुम किसी तरफ़ ख़िंचाव महसूस करते हो? सामान्यत: सबका किसी बेतुकी चीज़ की तरफ़ आकर्षण होता है।'

‘तुम मुझ पर हँसोगी।’

वह मुस्कराई।

‘शायद।’

‘मुझे हमेशा जासूस बनने की छिपी हुई ललक रही है।’

‘असली वाला—स्कॉटलैंड यार्ड? या शरलॉक होम्स?’

‘ओह, हर हाल में शरलॉक होम्स। पर वास्तव में, गम्भीरता से कहूँ, तो मैं उस तरफ़ बेहद झुकाव रखता हूँ। एक बार मैं बेल्जियम में एक आदमी से मिला, जो एक प्रसिद्ध जासूस था, उसने मुझे काफ़ी प्रेरित किया। वह अद्भुत, छोटा-सा व्यक्ति था। वह कहा करता था कि जासूसी का सारा अच्छा काम सिर्फ़ व्यवस्था का मामला है। मेरा तरीका उसी पर आधारित है—हालाँकि मैं निश्चित रूप से काफ़ी आगे निकल आया हूँ। वह अनोखा आदमी बड़ा बांका था, पर आश्चर्यजनक रूप से चतुर था।’

मिस हॉवर्ड ने टिप्पणी की, ‘मुझे भी अच्छी जासूसी कहानी पसन्द है, पर बहुत-सी बकवास लिखी जाती हैं। आख़िरी अध्याय में अपराधी का पता चलता है। सब हैरान रह जाते हैं जबकि असली अपराधी तुम्हें फ़ौरन पता चल जाता है।’

मैंने बहस की, ‘बहुत से अपराधों का पता ही नहीं चल पाता है।’

‘मेरा मतलब पुलिस से नहीं था, बल्कि उन लोगों से था जो बिल्कुल वहीं होते हैं। जैसे परिवार। दरअसल तुम उन्हें बेवकूफ़ नहीं बना सकते। वे जान जायेंगे।’

मैं हँसी में बोला, ‘तब तो तुम सोचती हो कि अगर तुम किसी अपराध से जुड़ी हो, मान लो हत्या से, तो तुम फ़ौरन हत्यारे को जान जाओगी?’

‘ज़रूर मुझे जान लेना चाहिए। हो सकता है कि वकीलों के झुँड के आगे मैं साबित न कर सकूँ। पर मुझे विश्वास है कि मैं जान जाऊँगी। वह मेरे पास आयेगा तो मुझे पता चल जायेगा।’

मैंने सुझाव दिया, ‘वह औरत भी हो सकती है।’

‘शायद। पर क़त्ल एक हिंसक अपराध है। इसे ज़्यादातर एक पुरुष के साथ जोड़ना चाहिए।’

मिसेज़ कैवेन्डिश की साफ़ आवाज़ ने मुझे चौंका दिया। ‘ज़हर के मामले में नहीं। कल डॉ. बॉयरस्टीन कह रहे थे कि कुछ असामान्य विष डॉक्टरी पेशेवरों के लिए भी अज्ञात होते हैं, उस अज्ञान के कारण ज़हर से मारे गये असंख्य मामले अनसुलझे रह जाते हैं।

मिसेज़ इंग्लथोर्प ने चिल्लाकर कहा, ‘मेरी, ये वीभत्स बातें क्यों शुरू की हैं? मुझे ऐसा लग रहा है जैसे कोई मेरी कब्र पर से चलकर गया है। ओह, सिंथिया आ गयी!’

स्वैच्छिक सेवा दल की पोशाक में एक कम उम्र की युवती हल्के कदमों से दौड़ती हुई लॉन पर से आयी।

‘क्यों सिंथिया, आज देर हो गयी। ये मि. हेस्टिंग्स हैं — मिस मर्डोक।’

सिंथिया मर्डोक ताज़गी से भरपूर कम उम्र की युवती थी, जिसमें ज़िन्दगी और ऊर्जा भरी थी। उसने अपनी वर्दी की टोपी उतारकर फेंक दी। मैं उसके खुले, लहराते सुनहरी बालों और चाय के लिए बढ़ाये गये गोरे और छोटे-छोटे हाथों का प्रशंसक बन गया। गहरे रंग की आँखों और पलकों की वजह से वह और ख़ूबसूरत दिखती थी।

वह जॉन के पास घास पर पसर गयी जब मैंने उसे सैंडविचेज़ की प्लेट पकड़ाई तो वह मुझे देखकर मुस्करा दी।

‘यहाँ घास पर आकर बैठो। वह कहीं ज़्यादा अच्छा है।’

मैं कहना मानकर नीचे बैठ गया।

‘मिस मर्डोक, तुम टैडमिन्स्टर में काम करती हो, है न?’

उसने सिर हिला दिया। ‘अपने पापों की वजह से।’

मैंने मुस्कराते हुए कहा, ‘तो क्या वे तुम्हें सताते हैं?’

सिंथिया ने बड़प्पन के साथ कहा, ‘मैं उन्हें देख लूँगी।’

मैं बोला, ‘मेरी रिश्ते की एक बहन नर्सिंग कर रही है। वह बड़ी नर्सों से डरती है।’

‘मुझे ताज्जुब नहीं है। मि. हेस्टिंग्स, आप जानते हैं, वे होती ही ऐसी हैं। वे बिल्कुल ऐसी हैं। आप सोच भी नहीं सकते। पर भगवान का शुक्र है कि मैं नर्स नहीं हूँ। मैं दवाख़ाने में काम करती हूँ।’

मैंने मुस्कराते हुए पूछा, ‘तुम कितने लोगों को ज़हर देती हो?’

सिंथिया भी मुसकराकर बोली, ‘ओह, सैंकड़ों को।’

मिसेज़ इंग्लथोर्प ने पुकार कर कहा, ‘सिंथिया, क्या तुम मेरे लिए कुछ नोट लिख दोगी?’

‘ज़रूर, ऐमिली आंटी!’

वह फ़ौरन उठकर खड़ी हो गयी। उसके व्यवहार ने मुझे याद दिला दिया कि वह आश्रिता थी। मिसेज़ इंग्लथोर्प चाहे उसके प्रति दयालु थीं, पर उसे यह असलियत भूलने नहीं देती थीं।

मेरी मेज़बान मेरी तरफ़ मुड़ी।

‘जॉन तुम्हें तुम्हारा कमरा दिखा देगा। खाना साढ़े सात बजे खाया जायेगा। कुछ वक़्त से हमने देर से खाना बन्द कर दिया है। हमारे सदस्य की पत्नी लेडी टैडमिन्स्टर—स्वर्गीय लॉर्ड एबॉट्स्बरी की बेटी—ऐसा ही करती हैं। वह मुझसे इस बात पर सहमत है कि हमें ख़र्च में किफ़ायत की मिसाल रखनी चाहिए। हमारी घरेलू व्यवस्था युद्ध स्तर पर चलती है; हम यहाँ कुछ भी बरबाद नहीं करते हैं—यहाँ तक कि रद्दी काग़ज़ की हर चिन्दी को भी बोरों में भरकर भेज दिया जाता है।

मैंने अपनी तारीफ़ ज़ाहिर की, और जॉन मुझे घर में ले गया, फिर चौड़ी सीढ़ियों से ऊपर गये, जहाँ वह इमारत के दो हिस्सों, दाहिने और बाँयें, में बँट गयी थीं। मेरा कमरा बाँयी तरफ़ के हिस्से में था और पार्क की तरफ़ खुलता था।

जॉन मुझे छोड़कर चला गया, और कुछ मिनट बाद मैंने जब अपनी खिड़की से देखा तो वह सिंथिया की बाँहों में बाँहें डाले धीरे-धीरे टहल रहा था। मैंने मिसेज़ इंग्लथोर्प को अधीरता से पुकारते सुना ‘सिंथिया’ और लड़की भागती हुई घर लौट आयी। उसी पल पेड़ की छाया से निकल कर एक आदमी उसी दिशा में धीरे-धीरे चलने लगा। वह लगभग चालीस का दिखता था। उसका रंग काफ़ी काला था, हजामत किया हुआ चेहरा उदास था। कोई ख़्याल उसे अपने वश में किए हुए था। जाते हुए उसने ऊपर मेरी खिड़की की तरफ़ देखा। हालाँकि हमारी पन्द्रह साल पहले हुई पिछली मुलाकात के बाद से वह काफ़ी बदल गया था फिर भी मैं उसे पहचान गया। वह जॉन का छोटा भाई लॉरेंस कैवेन्डिश था। मैं सोचने लगा कि उसके चेहरे के अलग भाव का कारण क्या रहा होगा।

फिर मैंने उसे दिमाग़ से निकाल दिया और अपने मामलों के बारे में सोचने लगा।

शाम काफ़ी ख़ुशगवार बीती; उस रात मैं रहस्यमय औरत मेरी कैवेन्डिश के सपने देखता रहा।

अगली सुबह धूप चमक रही थी, और मैं एक ख़ुशगवार सैर की उम्मीद में था।

मुझे दोपहर के भोजन तक मिसेज़ मेरी कैवेन्डिश दिखाई नहीं दीं, तब उसने मुझे सैर पर ले जाने को ख़ुद कहा। हमने पूरी दोपहर जंगल में सैर करते हुए मनोहारी ढंग से बिताई और पाँच बजे के करीब घर लौटे।

हमारे बड़े हॉल में घुसते ही जॉन ने दोनों को सिगरेट पीने वाले छोटे कमरे में बुलाया। मैं उसका चेहरा देखते ही फ़ौरन समझ गया कि कुछ परेशान करने वाली बात हुई है। हम उसके पीछे-पीछे गये और हमारे घुसते ही उसने दरवाज़ा बन्द कर लिया।

'देखो मेरी, एक बहुत बड़ी गड़बड़ हो गयी है। ऐवी की एल्फ्रेड इंग्लथोर्प से लड़ाई हो गयी और वह जा रही है।'

'ऐवी? जा रही है?'

जॉन ने उदासी से सिर हिलाया।

'हाँ; देखो, वह माँ के पास गयी थी, और—ओह, वह ख़ुद आ गयी।'

मिस हॉवर्ड घुसी। उसके होंठ कस कर बंद थे, और हाथ में एक छोटा सूटकेस था। वह उत्तेजित और दृढ़ लग रही थी, थोड़ी-सी आत्मरक्षात्मक भी।

वह फट पड़ी, 'जो भी हो, मैं जो सोचती हूँ वह कह चुकी।'

मिसेज़ कैवेन्डिश बोली, 'ऐवेलिन, यह सच नहीं हो सकता!'

मिस हॉवर्ड ने सख़्ती से सिर हिलाया।

'बिल्कुल सच है! मुझे डर है कि मैंने ऐमिली से जो कह दिया, वह जल्दी ही भूलकर माफ़ नहीं करेगी। अगर बात थोड़ी अन्दर चुभी है, तो बुरा मत मानना। मैंने भले ही ठीक कहा, पर वह शायद बत्तख की पीठ से बह जाने वाले पानी की तरह होगा। मैं साफ़ बोली : 'ऐमिली, तुम बुज़ुर्ग औरत हो, और बूढ़े मूर्ख जैसा मूर्ख कोई नहीं होता। वह आदमी तुमसे बीस साल छोटा है, और यह शादी उसने क्यों की इस बारे में ख़ुद को धोखा मत दो। उसने सिर्फ़ पैसे के लिए शादी की है। उस किसान रेक्स की पत्नी बहुत सुन्दर है। ज़रा अपने एल्फ्रेड से पूछना कि वह वहाँ कितना वक़्त बिताता है।' वह बहुत ग़ुस्सा हो गयी, स्वाभाविक था। मैं कहती गयी : 'तुम्हें पसन्द हो या नहीं, मैं तुम्हें सावधान करूँगी। यह आदमी पलक झपकते तुम्हें बिस्तर पर ही मार सकता है। वह बुरा आदमी है। तुम मुझसे जो चाहो कह सकती हो, पर जो मैं कह रही हूँ, उसे याद रखना। वह एक बुरा आदमी है।'

'वे क्या बोलीं?'

मिस हॉवर्ड ने बहुत बुरा मुँह बनाया।

'प्रिय एल्फ्रेड—प्रियतम एल्फ्रेड—दुष्ट झूठे आरोपी—द्वेषपूर्ण झूठ—बुरी औरत—उसके प्यारे पति पर दोष लगाने वाली। मैं जितनी जल्दी उसका घर छोड़ दूँ, उतना अच्छा होगा। इसलिए मैं जा रही हूँ।'

'पर अभी तो नहीं?'

'इसी पल।'

कुछ देर हम बैठे हुए उसे घूरते रह गये। आख़िर जब जॉन कैवेन्डिश जान गया कि उसका आग्रह काम नहीं आयेगा तो वह ट्रेनों के बारे में पता करने चला गया। उसकी पत्नी उसके

पीछे-पीछे मिसेज़ इंग्लथोर्प को अच्छी तरह सोचने के लिए मनाने के बारे में बड़बड़ाती हुई चली गयी।

जैसे ही वह कमरे से निकली, मिस हॉवर्ड का चेहरा बदल गया। वह जल्दी से मेरी तरफ़ झुकी।

'मि. हेस्टिंग्स, तुम ईमानदार हो। क्या मैं तुम पर विश्वास कर सकती हूँ?'

मैं थोड़ा चौंक उठा। उसने अपना हाथ मेरी बाँह पर रखा, और अपनी आवाज़ को फुसफुसाहट में बदल कर बोली: 'मि. हेस्टिंस उसका ध्यान रखना। बेचारी मेरी ऐमिली। वे सब के सब घातक शार्क मछलियों के झुँड की तरह हैं। ओह, मैं जानती हूँ कि मैं क्या कह रही हूँ। इनमें से एक भी ऐसा नहीं है जिसे पैसों की कठिनाई नहीं है और उससे पैसे नहीं ऐंठना चाहता है। मैं उसे जितना बचा सकती थी, बचाती रही। अब मैं रास्ते से हट जाऊँगी, वे उस पर हावी होंगे।'

मैंने कहा, 'मिस हॉवर्ड, मैं ज़रूर वह सब करूँगा जो कर सकता हूँ, पर मुझे विश्वास है कि तुम उत्तेजित और बहुत थकी हुई हो।'

उसने मुझे बीच में रोक कर अपनी तर्जनी धीरे से हिलाते हुए कहा, 'युवक, मेरा भरोसा करो, मैंने यह दुनिया तुमसे ज़्यादा देखी है। मैं तुमसे सिर्फ़ अपनी आँखें खुली रखने को कह रही हूँ। मेरा क्या मतलब है, यह तुम देख लोगे।'

खुली खिड़की से मोटर की धड़धड़ सुनाई दी, मिस हॉवर्ड उठी और दरवाज़े की तरफ़ बढ़ गयी। बाहर से जॉन की आवाज़ आयी। हैंडल पर हाथ रखे हुए उसने अपना सिर घुमाया बौर मुझे इशारा करके बुलाया, 'मि. हेस्टिंग्स, सबसे ज़्यादा उसके उस दुष्ट पति पर नज़र रखना।'

इससे ज़्यादा बात करने का समय नहीं था। मिस हॉवर्ड को शिकायतों और विदा के सामूहिक शोर ने निगल लिया। इंग्लथोर्प दम्पत्ति नहीं आये।

जैसे ही कार गयी, मिसेज़ कैवेन्डिश अचानक उस दल से अलग होकर, कार की जगह से लॉन को पार करती हुई एक लम्बे दाढ़ी वाले आदमी से मिलने के लिए बढ़ी, जो घर की तरफ़ आ रहा था। उसकी तरफ़ अपना हाथ बढ़ाते हुए उसके गाल लाल हो गये।

मैंने तीख़ी आवाज़ में पूछा, 'वह कौन है?' क्योंकि मुझे सहज ज्ञान से उस आदमी पर अविश्वास हुआ।

जॉन रूखाई से बोला, 'ये डॉ. बॉयरस्टीन है।'

'और यह डॉ. बॉयरस्टीन कौन है?'

'यह गाँव में रहता है। एक बुरे स्नायविक विकार से उबरने के बाद वे यहाँ आराम से सुधार के लिए आये हैं। वे लन्दन के विशेषज्ञ हैं; बहुत चतुर आदमी है—मेरा मानना है कि वे ज़हर पर काम करने वाले विश्व के महान जीवित विशेषज्ञों में से एक हैं।

उत्साही सिंथिया ने फ़ौरन कहा, 'वह मेरी का अच्छा दोस्त है।

जॉन कैवेन्डिश ने भौंहें चढ़ाईं और विषय बदल दिया।

'हेस्टिंग्स, सैर के लिए चलो। ये मामला बहुत बुरा हुआ। उसकी ज़बान हमेशा से रूखी थी, लेकिन इंगलैंड में ऐवेलिन हॉवर्ड से ज़्यादा ईमानदार दोस्त नहीं है।

उसने बगीचे के बीच का रास्ता लिया। इनकी ज़मीन के एक किनारे पर जो जंगल था, उसमें से चलते हुए गाँव की तरफ़ गये।

घर लौटते वक़्त जब एक फाटक में से निकल रहे थे, तब विपरीत दिशा से आती एक सुन्दर जिप्सी जैसी युवती झुकी और मुसकुराई।

मैंने तारीफ़ से भरी टिप्पणी की, 'सुन्दर युवती है।'

जॉन का चेहरा सख़्त हो गया, 'वह मिसेज़ रैक्स है।'

'वही जिसके बारे में मिस हॉवर्ड—'

जॉन ने अनावश्यक रूखाई से कहा, 'बिल्कुल।'

मैं उस बड़े घर की सफ़ेद बालों वाली बुजुर्ग महिला और हमारी तरफ़ देखकर मुस्कराने वाले छोटे-से, तीखे, दुष्ट चेहरे के बारे में सोचने लगा, एक अस्पष्ट पूर्वाभास की कंपकंपी मुझमें दौड़ गयी। मैंने उसे एक तरफ़ हटा दिया।

मैं जॉन से बोला, 'स्टाईल्स सचमुच एक भव्य पुरानी जगह है।'

उसने कुछ उदासी से सिर हिलाया।

'हाँ यह अच्छी जायदाद है। किसी दिन यह मेरी हो जायेगी। अगर मेरे पिता ने एक सही वसीयत बनाई होती तो अभी मेरा इस पर अधिकार होता और तब मैं इतना तंगहाल नहीं होता जितना अब हूँ।'

'क्या तुम्हें पैसे की तंगी है?'

'हेस्टिंग्स, मुझे यह बात तुम्हें बताने में कोई झिझक नहीं हो रही है कि मैं पैसों की तंगी के कारण मुश्किल में हूँ।'

‘क्या तुम्हारा भाई तुम्हारी मदद नहीं कर सकता?’

‘लॉरेंस? उसने अपनी एक-एक पाई बेकार की कविताओं को छपवाकर ख़ूबसूरत जिल्दों में बँधवाने में बर्बाद कर दी। नहीं, हम सब गरीब हैं। मैं यह ज़रूर कहूँगा कि हमारी माँ हमारे प्रति बहुत अच्छी रही हैं। मतलब, अब तक। जब से उनकी शादी हुई है, निस्संदेह—’ उसने भौंहें चढ़ाकर बात बीच में छोड़ी।

पहली बार मुझे लगा कि ऐवेलिन हॉवर्ड के साथ वातावरण में से कुछ ऐसा चला गया है जिसे बता नहीं सकते। उसके होने से सुरक्षा लगती थी। अब वह हट गयी थी—हवा में शक़ मंडरा रहा था। मुझे डॉ. बॉयरस्टीन के अशुभ चेहरे की याद आ गयी। मेरे मन में हर व्यक्ति और स्थिति को लेकर एक सन्देह भर गया था। पल भर के लिए मुझे आने वाले अनिष्ट की आशंका हुई।

दूसरा अध्याय

16-17 जुलाई

मैं पाँच जुलाई को स्टाईल्स पहुँचा था। अब मैं उस महीने की सोलह, सत्रह तारीख़ों की घटनाओं पर आता हूँ। पाठकों की सुविधा के लिए मैं उन दिनों जो कुछ हुआ उसे यथासम्भव ज्यों का त्यों दोहराऊँगा। बाद में मुकदमे के वक़्त एक लम्बी थकाने वाली जिरह की प्रक्रिया में उन्हें फिर से प्रकाश में लाया गया था।

ऐवेलिन हॉवर्ड ने जाने के कुछ दिन बाद मुझे एक पत्र लिखा, जिसमें यह बताया कि वह मिडलिंघम के एक बड़े अस्पताल में नर्स का काम कर रही थी। यह कारख़ानों का शहर लगभग पन्द्रह मील दूर था। पत्र में यह प्रार्थना की थी कि अगर मिसेज़ इंग्लथोर्प सुलह की इच्छा जताएँ तो उसे ख़बर कर दूँ।

उन शान्तिपूर्ण दिनों में मिसेज़ कैवेन्डिश की डॉ. बॉयरस्टीन के साथ की अजीब और रहस्यमय इच्छा मुझे दूध में मक्खी की तरह परेशान किये थी। मैं कल्पना भी नहीं कर सकता था कि उसे उस आदमी में क्या दिखता था, पर वह हमेशा उसे घर बुलाती रहती थी और बहुत बार उसके साथ लम्बी यात्राओं पर जाती थी। मैं स्वीकार करता हूँ कि उसके आकर्षण को देखने में असमर्थ था।

सोलह जुलाई को सोमवार था। वह बहुत हलचल वाला दिन था। शनिवार को प्रसिद्ध बाज़ार लगा था। रात को उसी दान के तहत एक मनोरंजन कार्यक्रम रखा गया था, जिसमें मिसेज़ इंग्लथोर्प युद्ध से जुड़ी एक कविता सुनाने वाली थीं। हम सब गाँव के उस हॉल को सजाने और व्यवस्थित करने में व्यस्त थे, जहाँ कार्यक्रम होने वाला था। हमने दोपहर का भोजन काफ़ी देर में खाया, बाद में बगीचे में आराम करते रहे। मुझे जॉन का व्यवहार कुछ अस्वाभाविक लगा। वह बहुत उत्तेजित और बेचैन लग रहा था।

शाम के कामों के शुरू होने से पहले, चाय के बाद, मिसेज़ इंग्लथोर्प आराम करने चली गयीं। मैंने मेरी कैवेन्डिश को टेनिस के खेल के लिए चुनौती दी।

लगभग पौने सात बजे मिसेज़ इंग्लथोर्प ने हमें बुलाकर कहा कि उस रात खाना जल्दी लगेगा, हम देर न करें। समय पर तैयार होने के लिए हमें भागदौड़ करनी पड़ी और खाना ख़त्म होने से पहले बाहर मोटर इन्तज़ार कर रही थी।

मनोरंजन कार्यक्रम बहुत सफल रहा था। मिसेज़ इंग्लथोर्प के कवितापाठ पर बहुत तालियाँ बजी थीं। कुछ झाँकियों में सिंथिया ने भी भाग लिया था। झाँकियों में साथ भाग लेने वाली कुछ सहेलियों के साथ खाना खाने और रात रहने के लिए बुलाये जाने की वजह से वह हमारे साथ नहीं लौटी थी।

बहुत थकी होने की वजह से मिसेज़ इंग्लथोर्प ने अगली सुबह बिस्तर में ही नाश्ता लिया, पर साढ़े बारह बजे के करीब वे फुर्तीली मन:स्थिति में थीं, और मुझे और लॉरेंस को जबरन दोपहर के खाने की पार्टी में ले गयीं।

लेडी टैडमिन्स्टर की बहन रोलस्टोन ने इतना सौम्य निमन्त्रण भेजा था। रोलस्टोन्स अपने साथ कॉन्करर परिवार को लाये थे जो यहाँ के सबसे पुराने परिवारों में से हैं।

मेरी ने डॉ. बॉयरस्टीन के साथ भेंट के बहाने ख़ुद को छुटकारा दिला लिया था।

दोपहर के भोजन का समय सुखद रहा। जब हम वहाँ से चले, तो लॉरेंस ने टैडमिन्स्टर की तरफ़ से लौटने का सुझाव दिया ताकि हम सिंथिया से उसके दवाख़ाने में मिलते जायें। वह जगह हमारे रास्ते से मुश्किल से एक मील अलग थी। मिसेज़ इंग्लथोर्प ने इसे बढ़िया विचार कहा, पर क्योंकि उन्हें बहुत से पत्र लिखने थे, इसलिए उन्होंने कहा कि वे हमें उतारती हुई चली जायेंगी। हम सिंथिया के साथ घोड़ा-गाड़ी में लौट सकते थे।

अस्पताल के नौकर ने शक़ के कारण हमें तब तक रोके रखा, जब तक सिंथिया ने आकर हमें पहचानने की जिम्मेदारी नहीं ली। वह अपने लम्बे सफ़ेद कोट में बहुत प्यारी लग रही थी। वह हमें ऊपर अपने कमरे में ले गयी, और अपने साथ के दवा देने वाले से मिलवाया। वह आदर जगाने वाला इंसान था, सिंथिया हँसते हुए उसे 'निब्स' नाम से पुकार रही थी।

उस छोटे कमरे में चारों तरफ़ नज़र दौड़ाते हुए मैंने ताज्जुब से कहा, 'कितनी सारी बोतलें हैं! क्या तुम वाकई जानती हो कि इनमें क्या है?'

सिंथिया ने कराहते हुए कहा, 'कोई नई बात कहो। यहाँ आनेवाला हरेक आदमी यही कहता है। वास्तव में हम सोच रहे हैं कि ऐसा न कहने वाले पहले आदमी को प्रथम पुरस्कार देंगे और मैं जानती हूँ कि तुम अगली यही बात कहोगे : 'तुम कितने लोगों को ज़हर दे चुकी हो?'

मैंने हँसते हुए ग़लती मान ली।

'अगर तुम लोग यह जानते कि कितनी आसानी से किसी को ग़लती से दिया गया ज़हर भी घातक हो सकता है, तो तुम इस बारे में मज़ाक नहीं करते। चलो, हम चाय पीते हैं। इस अलमारी में बहुत तरह के रहस्यों के भण्डार हैं। नहीं, लॉरेंस—वह ज़हर की अलमारी है। बड़ी अलमारी—हाँ वही।'

हमने बहुत हँसी-मज़ाक के साथ चाय पी। बाद में धोने के काम में सिंथिया की मदद की। हमने अभी आख़िरी चम्मच रखा ही था कि किसी ने दरवाज़ा खटखटाया। सिंथिया और निब्स के चेहरों पर अचानक डर से सख़्ती और सुन्न करने वाला भाव आ गया।

सिंथिया ने तीखी पेशेवर आवाज़ में कहा, 'अन्दर आ जाओ।'

एक डरी हुई-सी, युवा नर्स, ने आकर एक बोतल निब्स की तरफ़ बढ़ाई, जिसने उसे सिंथिया की तरफ़ जाने का इशारा किया और कुछ रहस्यपूर्ण ढंग से बोला : 'दरअसल आज मैं यहाँ नहीं हूँ।'

सिंथिया ने बोतल ली, जज की-सी सख़्ती से उसका परीक्षण करते हुए बोली : 'इसे सुबह भेजा जाना चाहिए था।'

'सिस्टर को बहुत अफ़सोस है। वह भूल गयी थी।'

‘सिस्टर को दरवाज़े पर बाहर लिखे नियम पढ़ लेने चाहिए।’

उस छोटी नर्स की भावभंगिमा से मैंने जान लिया कि उसमें उस डरावनी सिस्टर तक यह सन्देश पहुँचाने की थोड़ी-सी भी हिम्मत नहीं थी।

सिंथिया ने कहा, ‘अब यह कल तक नहीं हो सकता,’ और बात ख़त्म कर दी।

‘क्या आप रात तक भी नहीं दे सकतीं?’

सिंथिया ने भद्रतापूर्वक कहा, ‘हम बहुत व्यस्त हैं, पर अगर समय मिला तो कर देंगे।’

छोटी नर्स चली गयी, सिंथिया ने फ़ौरन ताक पर रखे जार को उतारा, बोतल को फिर से भरा और दरवाज़े के बाहर वाली मेज़ पर रख दिया।

मैं हँस पड़ा।

‘अनुशासन बनाये रखना चाहिए।’

‘बिल्कुल। हमारी छोटी बालकनी पर आओ। वहाँ से तुम्हें बाहर का सब कुछ दिखाई दे सकेगा।’

मैं सिंथिया और उसके सहयोगी के पीछे चला गया और वे मुझे अलग-अलग इलाकों को दिखाते रहे। लॉरेंस पीछे रुका रहा था, पर कुछ मिनट बाद सिंथिया ने उसे बुलाया और सबके साथ बैठने को कहा। फिर उसने अपनी घड़ी देखी।

‘निब्स, कुछ और तो नहीं करना है?’

‘नहीं।’

‘ठीक है। फिर हम बन्द करके चलते हैं।’

उस दोपहर लॉरेंस मुझे अलग ही रूप में दिखा। जॉन की तुलना में उसे जान पाना बहुत मुश्किल था। वह अपने भाई से लगभग हर तरह अलग, असामान्य रूप से भिन्न, शरमीला और संकोची था। फिर भी उसके व्यवहार में एक ख़ास तरह की मोहकता थी, और मुझे वह अच्छी लगी थी। मुझे लगता था कि अगर कोई उसे वास्तव में ठीक से जान लेता, तो उसके प्रति गहरा स्नेह करने लगता। मैं हमेशा सोचा करता था कि सिंथिया के प्रति उसका व्यवहार बहुत नियन्त्रित था, और अपनी तरफ़ से वह भी उससे शरमाती थी। पर इस दोपहर दोनों काफ़ी ख़ुश थे; और बच्चों की तरह आपस में बातें कर रहे थे।

गाँव में से निकलते वक़्त मुझे याद आया कि मुझे कुछ डाक-टिकट चाहिए थे, इसी कारण हम डाकख़ाने के पास रुके।

जब मैं बाहर निकला तो अन्दर घुसते एक छोटे आदमी से टकरा गया। मैं एक तरफ़ हट गया और उससे माफ़ी माँगी, तभी अचानक, एक ऊँची आवाज़ के साथ उसने मुझे अपनी बाँहों में बाँध लिया और मुझे चूम लिया।

वह ज़ोर से बोला, ‘मेरे दोस्त हेस्टिंग्स! हाँ, तुम हेस्टिंग्स ही हो!’

मैं चिल्लाया, ‘पॉयरो!’

मैं घोड़ा-गाड़ी की तरफ़ मुड़ा।

‘मिस सिंथिया, मेरे लिए यह एक सुखद मुलाकात है। ये मेरा पुराना दोस्त मि. पॉयरो है, जिससे मैं सालों से नहीं मिला हूँ।

सिंथिया खुशी खुशी बोली, 'ओह, हम मि. पॉयरो को जानते हैं। पर यह नहीं जानते थे कि वे आपके दोस्त हैं।'

पॉयरो गम्भीरता से बोला, 'हाँ, बिल्कुल, मैं मिस सिंथिया को जानता हूँ। मैं अच्छी महिला मिसेज़ इंग्लथोर्प की दया से यहाँ हूँ।' मेरी खोजी नज़र को देखकर वह बोला, 'हाँ मेरे दोस्त, उन्होंने दया करके मेरे देश के सात लोगों को अपना आतिथ्य दिया; जिन्हें अफ़सोस है कि उनके अपने देश ने शरणार्थी बना दिया था। हम बेल्जियन लोग उनकी इस दया को हमेशा याद रखेंगे।'

पॉयरो देखने में असाधारण, छोटा-सा आदमी था। उसकी लम्बाई मुश्किल से पाँच फुट चार इंच से ज़्यादा होगी, पर फिर भी गरिमापूर्ण व्यक्तित्व था। उसका सिर बिल्कुल अण्डे के आकार का था और वह हमेशा उसे एक तरफ़ थोड़ा झुकाये रखता था। उसकी अकड़ी हुई मूँछें फौजियों जैसी थीं। उसकी साफ़-सुथरी पोशाक अविश्वसनीय लगती थी। मुझे विश्वास है कि धूल का एक कण उसे गोली के घाव से ज़्यादा तकलीफ़ देता होगा। फिर भी यह अनोखा बाँका आदमी अब इतनी बुरी तरह लंगड़ा रहा था कि मुझे देखकर अफ़सोस हुआ। वह अपने समय में बेल्जियन पुलिस का सर्वाधिक प्रख्यात व्यक्ति हुआ करता था। एक जासूस के रूप में उसमें असाधारण दूरदर्शिता थी। उसने उन दिनों के कुछ बहुत चकरा देने वाले मामलों को सुलझाकर जीत हासिल की थी।

उसने मुझे इशारे से वह घर दिखाया जहाँ वह अपने बेल्जियम साथियों के साथ रहता था, और मैंने जल्दी ही जाकर उससे

मिलने का वादा किया। फिर उसने बड़े दिखावे के साथ अपना हैट सिंथिया की ओर हिलाया और हम वहाँ से चल दिये।

सिंथिया ने कहा, 'वह छोटा-सा आदमी बड़ा प्यारा है। मैं नहीं जानती थी कि तुम्हारा परिचित है।'

मैंने जवाब में कहा, 'तुम नहीं जानती थीं कि तुम एक प्रसिद्ध व्यक्ति का मनोरंजन कर रही थीं।'

घर तक के बाकी रास्ते में मैं हरक्यूल पॉयरो के विभिन्न कारनामों और जीतों के बारे में बताता रहा।

हम खुशी-खुशी घर लौटे। जैसे ही हम हॉल में घुसे, मिसेज़ इंग्लथोर्प अपनी बैठक से बाहर आयीं। वह बहुत लाल और परेशान दिख रही थीं।

वे बोलीं, 'ओह, तुम हो।'

सिंथिया ने पूछा, 'ऐमिली आंटी, क्या कुछ हुआ है?'

मिसेज़ इंग्लथोर्प तीख़ी आवाज़ में बोलीं, 'बिल्कुल नहीं, क्या होना था?' फिर खाना बनाने वाली नौकरानी डॉरकस को खाने वाले कमरे में जाते देखकर उसे बुलाया और बैठक में से टिकट लाने को कहा।

'जी, मैडम'। पुरानी नौकरानी झिझकी, फिर थोड़ी सकुचाती हुई बोली, 'क्या आपको नहीं लगता कि आपको आराम करना चाहिए? आप बहुत थकी हुई लग रही हैं।'

'शायद तुम ठीक कह रही हो, डॉरकस — हाँ — नहीं — अभी नहीं। मुझे कुछ पत्र डाक जाने के वक़्त से पहले ख़त्म करने हैं। क्या तुमने मेरे कहे के मुताबिक शयनकक्ष में अँगीठी जला दी है?

'हाँ मैडम!'

'तो मैं खाने के फ़ौरन बाद सीधी बिस्तर पर जाऊँगी।'

वे फिर से अपनी बैठक में चली गयीं, और सिंथिया उन्हें पीछे से घूरती रही।

उसने लॉरेंस से कहा, 'भगवान भला करें! मैं हैरान हूँ कि क्या हो रहा है?'

ऐसा लगा जैसे उसने सुना ही न हो, क्योंकि बिना एक शब्द बोले, वह मुड़ा और घर से बाहर चला गया।

मैंने सिंथिया को रात के खाने से पहले झट से टेनिस की एक बारी खेलने का सुझाव दिया, उसके राज़ी होने पर मैं ऊपर की तरफ़ दौड़ा ताकि अपना रैकेट ला सकूँ।

मिसेज़ कैवेन्डिश सीढ़ियों से उतर रही थीं। हो सकता है कि यह मेरी कल्पना हो, पर वे अजीब और परेशान दिख रही थीं।

मैंने ख़ुद को तटस्थ दिखाते हुए पूछा, 'डॉ. बॉयरस्टीन के साथ सैर अच्छी रही?'

उसने रुखाई से कहा, 'मैं नहीं गयी। मिसेज़ इंग्लथोर्प कहाँ हैं?'

'बैठक में।'

उसका हाथ सीढ़ी की रेलिंग पर कस गया, फिर जैसे सामना करने की हिम्मत जुटाकर, मेरे पास से तेज़ी से सीढ़ियाँ उतरी, हॉल पार करती हुई बैठक में घुसी और पीछे से दरवाज़ा बन्द कर लिया।

कुछ समय बाद जब मैं भागता हुआ टेनिस कोर्ट की तरफ़ जा रहा था तो मुझे बैठक की खुली खिड़की के पास से निकलना पड़ा और वहाँ होती बातचीत के टुकड़े सुनने से ख़ुद को रोक नहीं सका। मेरी कैवेन्डिश की आवाज़ में ख़ुद पर काबू करने की असफल कोशिश झलक रही थी, 'तो आप मुझे वह नहीं दिखायेंगी।'

इस पर मिसेज़ इंग्लथोर्प का जवाब था : 'प्रिय मेरी, इसका उस मामले से कोई ताल्लुक नहीं है।'

'तो मुझे दिखाओ।'

'मैं तुम्हें बता रही हूँ कि तुम जो सोच रही हो, वैसा कुछ नहीं है। इससे तुम्हारा कोई वास्ता नहीं है।'

इसके जवाब में मेरी कैवेन्डिश ने बढ़ती हुई कड़वाहट के साथ कहा, 'ज़रूर, मुझे पता होना चाहिए था कि आप उसे बचायेंगी।'

सिंथिया मेरा इन्तज़ार कर रही थी, उसने आतुरता से मेरा स्वागत करते हुए कहा : 'मैं बताऊँ! बड़ी ज़बरदस्त लड़ाई हुई है! मैंने डॉरकस से पूरी बात निकाल ली है।'

'कैसी लड़ाई?'

'ऐमिली आंटी और उस आदमी के बीच की लड़ाई। मैं आशा करती हूँ कि अब उन्हें उसकी असलियत पता चल गयी होगी।'

'तो क्या डॉरकस वहाँ थी?'

'बिल्कुल नहीं। वह उस वक़्त दरवाज़े के पास थी। लड़ाई वास्तव में एक पुरानी भड़ास थी। काश मैं जान पाती कि वह किस बारे में थी।'

मैं मिसेज़ रेक्स के जिप्सी जैसे चेहरे और ऐवेलिन हॉवर्ड की चेतावनियों के बारे में सोचने लगा, पर बुद्धिमानी से अपनी शान्ति बनाये रखी; जबकि सिंथिया हर सम्भव कल्पना को ख़त्म करती जा रही थी, पर साथ ही खुशी-खुशी आशा कर रही थी, 'ऐमिली आंटी उसे निकाल देंगी, और फिर कभी उससे बात नहीं करेंगी।'

मैं जॉन को पकड़ना चाहता था, पर वह कहीं नहीं दिख रहा था। स्पष्ट था कि उस दोपहर वहाँ कुछ बहुत महत्वपूर्ण हुआ था। मैं उन सुने हुए कुछ शब्दों को भूलना चाह रहा था, पर किसी तरह उन्हें अपने मन से पूरी तरह हटा नहीं पा रहा था। उस मामले को लेकर मेरी कैवेन्डिश परेशान क्यों थी?

जब मैं नीचे खाना खाने आया, तब मिस्टर इंग्लथोर्प बैठक में बैठा था। उसका चेहरा हमेशा की तरह भावरहित था। उस आदमी की अजीब अवास्तविकता मुझे नये सिरे से दिखी। आख़िर मिसेज़ इंग्लथोर्प नीचे आईं। वे, अब भी परेशान दिख रही थीं, खाने के दौरान एक तरह का नियन्त्रित सन्नाटा था। इंग्लथोर्प अस्वाभाविक रूप से चुप था। वह नियम से अपनी पत्नी को छोटी-मोटी देखभाल से घेरे हुए था, जैसे पीठ के पीछे गद्दी लगाना, और कुल मिलाकर एक समर्पित पति की भूमिका अदा कर रहा था। खाने के फ़ौरन बाद मिसेज़ इंग्लथोर्प अपनी बैठक में लौट गयीं।

उन्होंने आवाज़ दी, 'मेरी, मेरे लिए कॉफ़ी अन्दर भेज दो। डाक का काम करने के लिए मेरे पास सिर्फ़ पाँच मिनट हैं।'

सिंथिया और मैं जाकर ड्राइंगरूम की खुली खिड़की के पास बैठ गये। मेरी कैवेन्डिश हमारी कॉफ़ी लेकर आयी। वह बहुत उत्तेजित लग रही थी।

उसने पूछा, 'तुम युवा लोगों को रोशनी पसन्द है या धुँधलके में आनन्द आता है? सिंथिया क्या तुम मिसेज़ इंग्लथोर्प की कॉफ़ी दे आओगी? मैं प्याले में डाल देती हूँ।'

इंग्लथोर्प ने कहा, 'मेरी, तुम परेशान मत हो, मैं ऐमिली को दे आऊँगा।' उसने कॉफ़ी प्याले में डाली और बड़े ध्यान से उठाकर कमरे से बाहर चला गया।

लॉरेंस उसके पीछे चला गया, मेरी हमारे पास बैठ गयी।

कुछ देर तक हम तीनों चुपचाप बैठे रहे। रात बहुत सुन्दर थीं, गरम और स्थिर। मिसेज़ कैवेन्डिश खजूर के एक पत्ते से हल्के-हल्के अपनी हवा करती रहीं।

फिर वह धीरे से बुदबुदायीं, 'काफ़ी गर्मी है, तूफ़ान आने वाला है।'

अफ़सोस कि ये शान्तिपूर्ण पल कभी रुके नहीं रहते। मेरा स्वर्ग हॉल से आती हुई उस सुपरिचित और हार्दिक नापसन्द आवाज़ से निष्ठुरता से चूर-चूर हो गया।

सिंथिया ऊँची आवाज़ में बोल पड़ी, 'डॉ. बॉयरस्टीन, आने का कैसा विचित्र वक़्त है!'

मैंने ईर्ष्यापूर्वक मेरी कैवेन्डिश की तरफ़ नज़र डाली, पर वह काफ़ी अप्रभावित दिख रही थी, उसके गालों की हल्की पीली आभा में कोई फ़र्क नहीं पड़ा था।

कुछ ही पलों में एल्फ्रेड डॉक्टर को अन्दर ले आया, हँसता हुआ डॉक्टर ड्राइंगरूम में आने की स्थिति में न होने की वजह से मना कर रहा था। वास्तव में कीचड़ से पूरी तरह लथपथ होने के कारण वह बहुत दीन स्थिति में दिख रहा था।

मिसेज़ कैवेन्डिश चिल्ला पड़ी, 'डॉक्टर, तुम क्या कर रहे थे?'

डॉक्टर बोला, 'मैं माफ़ी माँगता हूँ। दरअसल मैं अन्दर आना ही नहीं चाहता था, पर मि. इंग्लथोर्प ने जिद की।'

हॉल में से टहलता हुआ जॉन आया, बोला, 'बॉयरस्टीन, तुम काफ़ी बुरी हालत में हो। कॉफ़ी पियो और बताओ कि तुम क्या कर रहे थे।'

'धन्यवाद; बताता हूँ।' वह दयनीय ढंग से हँसा और फिर उसने बताया कि उसे एक दुर्गम जगह पर दुर्लभ किस्म की फ़र्न दिखी, उसे लेने की कोशिश में उसका पैर फिसल गया और वह तालाब में गिर गया।

उसने आगे कहा, 'जल्दी ही धूप में मैं सूख गया, पर मैं बहुत अशोभनीय दिख रहा हूँ।'

इसी समय मिसेज़ इंग्लथोर्प ने हॉल में से सिंथिया को आवाज़ दी, लड़की भागकर चली आयी।

'क्या तुम मेरा डिब्बा ऊपर पहुँचा दोगी? मैं सोने जा रही हूँ।'

हॉल का दरवाज़ा चौड़ा था। जब सिंथिया उठी थी, तभी मैं भी उठ गया था, जॉन मेरे पास था। इसलिए वहाँ तीन गवाह थे जो यह कसम खा सकते थे कि मिसेज़ इंग्लथोर्प, तब तक बिना चखी, अपनी कॉफ़ी अपने हाथ में उठाकर ले गयी थीं। मेरी शाम डॉ. बॉयरस्टीन की उपस्थिति की वजह से पूरी तरह बर्बाद हो गयी थी। मुझे लग रहा था कि वह आदमी कभी नहीं जायेगा। पर आख़िर वह उठा, तब मैंने चैन की साँस ली।

मि. इंग्लथोर्प बोला, 'मैं गाँव तक तुम्हारे साथ चलता हूँ। मुझे भूसम्पत्ति के हिसाब-किताब के बारे में एजेंट से बात करनी है।' वह जॉन की तरफ़ मुड़ा। 'किसी को मेरे लिए बैठने की ज़रूरत नहीं है। मैं दरवाज़े की चाभी ले जा रहा हूँ।'

तीसरा अध्याय

ट्रैजेडी की रात

अपनी कहानी के इस हिस्से को स्पष्ट करने के लिए मैं स्टाईल्स की पहली मंजिल का नक्शा नीचे लगा रहा हूँ। 'ब' दरवाज़े से नौकरों के कमरे तक जाया जा सकता है। उनका दाहिने हिस्से से कोई सम्पर्क नहीं है जिसमें इंग्लथोर्प दम्पत्ति के कमरे हैं।

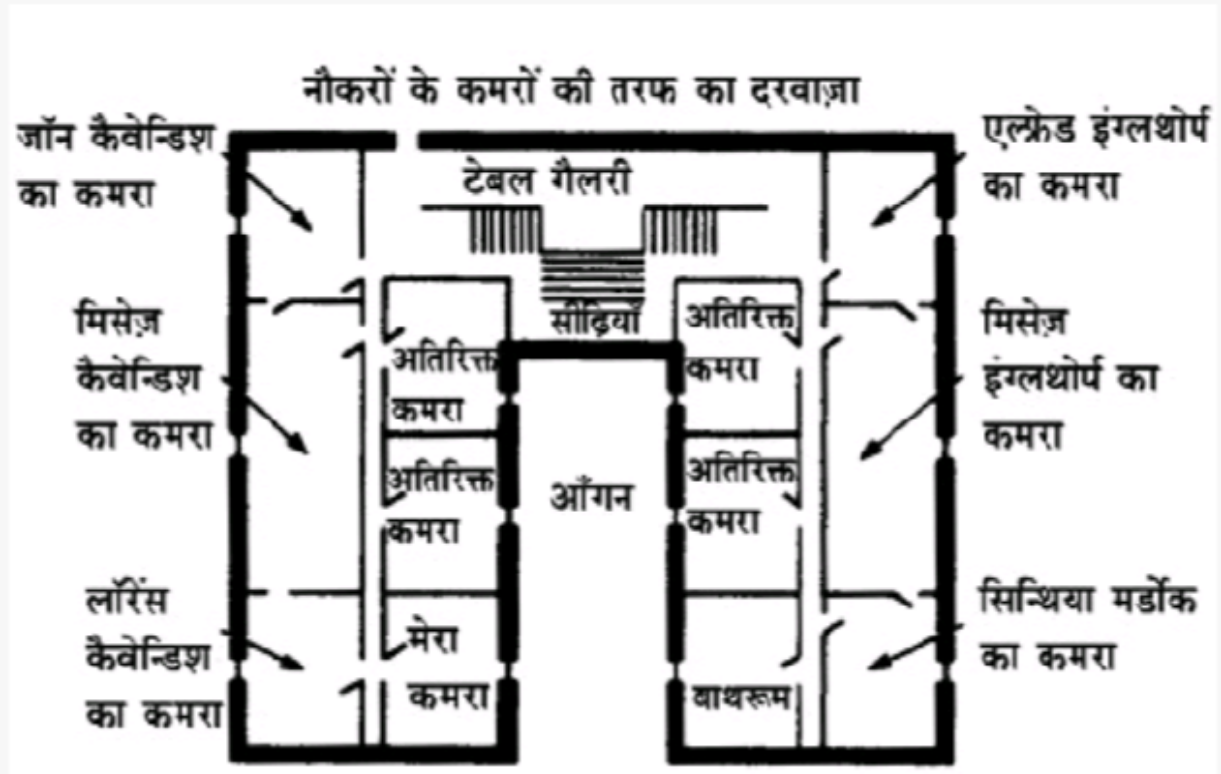

जब लॉरेंस ने मझे जगाया तब शायद आधी रात थी। उसके हाथ में मोमबत्ती थी, उसके चेहरे की परेशानी देखकर मुझे फ़ौरन महसूस हुआ कि कुछ बहुत गम्भीर गड़बड़ हुई है।

उठकर बिस्तर पर बैठते हुए और अपने बिखरे विचारों को समेटते हुए मैंने पूछा, 'क्या मामला है?'

‘हमें डर है कि माँ बहुत बीमार है। ऐसा लग रहा है जैसे उन्हें कोई दौरा पड़ा है। दुर्भाग्य से उन्होंने दरवाज़ा अन्दर से बन्द किया हुआ है।’

‘मैं फ़ौरन चलता हूँ।’

मैंने पलंग से उतर कर एक ड्रेसिंग गाउन पहना और गलियारे में लॉरेंस के पीछे चलने लगा। वहाँ से घर की गैलरी में से होते हुए घर के दाहिने हिस्से में गये।

जॉन कैवेन्डिश हमारे पास आ गया, एक-दो नौकर उत्तेजित और घबराये से खड़े थे। लॉरेंस अपने भाई की तरफ़ मुड़ा।

‘तुम्हें क्या लगता है कि क्या करना चाहिए?’

मैं सोचने लगा, उसके चरित्र का अनिर्णय कभी इतना स्पष्ट नहीं दिखा।

जॉन ने मिसेज़ इंग्लथोर्प के दरवाज़े का हैंडल ज़ोर से खटखटाया, पर कुछ नहीं हुआ। स्पष्ट था कि उसका ताला लगा था या अन्दर से सिटकिनी लगी थी। अब तक में सारा घर जाग गया। अन्दर से बेहद डरावनी आवाज़ें आ रही थीं। साफ़ था कि कुछ किया जाना ज़रूरी था।

डॉरकस चिल्लाई, ‘सर, मि. इंग्लथोर्प के कमरे से जाने की कोशिश करिए। ओह, बेचारी मालकिन!’

अचानक मैंने महसूस किया कि एल्फ्रेड इंग्लथोर्प हमारे बीच नहीं था। सिर्फ़ उसी की मौजूदगी का कोई नामोनिशान नहीं था। जॉन ने उसके कमरे का दरवाज़ा खोला। वहाँ बहुत अँधेरा था, पर पीछे-पीछे लॉरेंस मोमबत्ती लेकर आ रहा था, उस धीमी रोशनी में हमने देखा कि पलंग पर कोई सोया ही नहीं था, न किसी के उस कमरे में होने का कोई संकेत था।

हम सीधे दोनों कमरों को जोड़ने वाले दरवाज़े तक गये। वह भी अन्दर से बन्द था। क्या करना चाहिए?

डॉरकस चिल्लाई, हाथ मलते हुए बोली, 'सर, हम क्या करें?'

'हमें कोशिश करके दरवाज़े को तोड़ देना चाहिए। हालाँकि यह मुश्किल काम होगा। ऐसा है, एक नौकरानी को नीचे भेजो, बेली को जगाये और उससे कहे डॉ. बिल्किन्स को फ़ौरन बुला लाये। अब हमें दरवाज़ा खोलने की कोशिश करनी है। जरा रुको, क्या मिस सिंथिया के कमरे में भी एक दरवाज़ा नहीं है?'

'हाँ, सर, पर वह हमेशा बन्द रहता है। उसे कभी खोला नहीं जाता।'

'फिर भी, हम एक बार देख लेते हैं।'

वह गलियारे में से दौड़ता हुआ सिंथिया के कमरे तक गया। मेरी कैवेन्डिश वहाँ लड़की को हिला रही थी—जो शायद अस्वाभाविक रूप से गहरी नींद सोती होगी—और उसे जगाना चाह रही थी।

पल दो पल में वह वापस आ गया।

'कोई फ़ायदा नहीं हुआ। वह भी बन्द है। हमें दरवाज़ा तोड़ देना चाहिए। मेरे ख़्याल से यह दरवाज़ा गलियारे वाले से कुछ कमज़ोर है।'

हमने ज़ोर लगाकर एक साथ धक्का मारा। दरवाज़े का फ्रेम बहुत मजबूत था, बहुत देर तक हमारी कोशिशें नाकाम होती रहीं; अन्त में गूँजती हुई आवाज़ के साथ वह खुल गया।

हम एक साथ लड़खड़ाते हुए अन्दर पहुँचे, लारेंस अब भी अपनी मोमबत्ती पकड़े हुए था। मिसेज़ इंग्लथोर्प बिस्तर पर पड़ी थीं, उनका पूरा शरीर तेज़ पड़ते दौरों से परेशान था, ऐसे ही

एक दौरे में उनसे पलंग के पास वाली मेज़ पलट गयी होगी। जैसे ही हम घुसे, उनके हाथ पैर ढीले पड़ गये और वह तकियों पर पड़ गयीं।

जॉन कमरे में दूसरी तरफ़ गया और उसने गैस जलाई। एक नौकरानी ऐवी की तरफ़ मुड़कर, उसने उसे नीचे खाने वाले कमरे में जाकर ब्रांडी लाने को कहा। फिर वह अपनी माँ की तरफ़ गया, इस बीच मैंने गलियारे की तरफ़ वाले दरवाज़े की सिटकिनी खोल दी।

मैं लॉरेंस से यह कहने के लिए उसकी तरफ़ मुड़ा कि अब क्योंकि मेरी ज़रूरत नहीं है तो जाऊँ, पर मेरे शब्द मेरे होंठों पर जम गये। किसी इंसान के चेहरे पर मैंने ऐसी भयानक झलक कभी नहीं देखी थी। उसका रंग चॉक की तरह सफ़ेद था, काँपते हाथ में उसने जो मोमबत्ती पकड़ी हुई थी, उसकी मोम की बूँदें कालीन पर गिर रही थीं। उसकी आँखें डर से, या किसी ऐसे ही भाव से पथराई हुई थीं; वह मेरे सिर से ऊपर दूर की दीवार पर ऊपर के एक बिन्दु को आँखें जमाकर घूरे जा रहा था। ऐसा लग रहा था जैसे उसने कुछ ऐसा देख लिया था, जिसने उसे पत्थर बना दिया था। मैं सहज बुद्धि से उसकी आँखों की दिशा में देखने लगा, पर मैं कुछ भी अस्वाभाविक नहीं देख पाया। अँगीठी में अभी भी राख में कभी-कभी चिंगारी की झलक चमक उठती थी। मेंटल पीस पर रखी सज़ावटी चीज़ों की कतार निश्चित रूप से हानिरहित थी।

मिसेज़ इंग्लथोर्प के दौरे की तीव्रता कम होती लग रही थी। थोड़ा हाँफते हुए वे बात कर पा रही थीं।

‘अब बेहतर — बहुत अचानक — मेरी बेवकूफ़ी — ख़ुद को अन्दर से बन्द करना।’

बिस्तर पर एक परछाई पड़ रही थी, ऊपर देखा तो दरवाज़े के पास मेरी कैवेन्डिश सिंथिया को बाँह का सहारा दिये खड़ी थी जो पूरी तरह भौंचक्की और अपने से भिन्न दिख रही थी। उसका चेहरा बहुत ज़्यादा लाल था और वह बार-बार उबासियाँ ले रही थी।

मिसेज़ कैवेन्डिश ने धीमी, स्पष्ट आवाज़ में कहा, ‘बेचारी सिंथिया काफ़ी डरी हुई है।’ मैंने देखा, वह ख़ुद अपने सफ़ेद कुर्ते में थी। इसका मतलब मैं जो समय सोच रहा था, बात उससे बाद की थी। खिड़की के पर्दों के बीच से दिन की रोशनी की हल्की झलक आ रही थी और मैंटलपीस पर रखी घड़ी पाँच के लगभग का संकेत दे रही थी।

बिस्तर से आती एक घुटी हुई आवाज़ ने मुझे चौंका दिया। बदकिस्मत बूढ़ी महिला को दर्द के नये दौरे ने पकड़ लिया था। अब दौरे इतने तीव्र थे कि देखने में भयानक लग रहे थे। सब तरफ़ गड़बड़ थी। हम उनके पास इकट्ठा थे, पर उनकी मदद करने या दर्द को हल्का करने में असमर्थ थे। एक आख़िरी दौरे ने उन्हें पलंग से ऊपर उठा दिया, फिर उनका शरीर असामान्य रूप से धनुष की तरह सिर और पैरों पर टिक गया। मेरी और जॉन ने उन्हें थोड़ी और ब्रांडी देने की कोशिश की, जो असफल रही। एक-एक पल भाग रहा था। फिर एक बार शरीर उसी अजीब तरीके से कमान बना।

उसी वक़्त डॉ. बॉयरस्टीन रास्ता बनाते हुए हक़ के साथ कमरे में आये। बिस्तर पर पड़ी महिला को देखकर पल भर के लिए वे वहीं रुक गये, उसी वक़्त मिसेज़ इंग्लथोर्प ने डॉक्टर पर नज़र जमाये हुए, घुटी हुई आवाज़ में कहा 'एल्फ्रेड— एल्फ्रेड—' फिर वह पीछे तकियों पर गिरकर एकदम स्थिर हो गयीं। एक कदम में दूरी तय कर डॉक्टर पलंग तक पहुँच गया और उनकी बाँहें पकड़कर ताकत के साथ हिला रहा था, जैसा मेरी समझ से नकली साँस दिलाने के लिए किया जाता है। उसने तीखेपन से नौकरों को कुछ छोटे-छोटे आदेश दिये। उसके हाथ के दबंग इशारे ने हम सबको दरवाज़े तक पहुँचा दिया। हालाँकि हम सब अपने दिलों में जानते थे कि बहुत देर हो चुकी थी, अब कुछ भी नहीं किया जा सकता था। मैं उसके चेहरे को देखकर समझ गया था कि उसे भी बहुत कम उम्मीद थी।

आख़िर गम्भीरता से सिर हिलाते हुए उसने अपना काम छोड़ दिया। उस घड़ी हमें बाहर कदमों की आहट सुनाई दी और मिसेज़ इंग्लथोर्प के निजी डॉक्टर डॉ. विल्किन्स हड़बड़ाते हुए अन्दर आये, वे शरीर से भारी-भरकम, बात का बतंगड़ बनाने वाले व्यक्ति थे।

डॉ. बॉयरस्टीन ने कुछ शब्दों में सब बताया कि कैसे वे बाहर से जा रहे थे, तभी फाटक से कार निकली, बात पता चलते ही वे दौड़कर जितनी जल्दी हो सकता था, घर में आये। इस बीच कार डॉ. विल्किन्स को लेने चली गयी। फिर हाथ के हल्के से इशारे से पलंग पर पड़ी देह की तरफ़ इशारा किया।

डॉ. विल्किन्स बुदबुदाये, 'बहुत बुरा, ब—हुत बुरा हुआ। बेचारी महिला। हमेशा बहुत ज़्यादा काम करती रहती थीं — ज़रा ज़्यादा ही — मेरी सलाह के ख़िलाफ़। मैंने उन्हें चेतावनी दी थी, — 'जरा कम भागदौड़ किया करो।' पर नहीं — अच्छे कार्यों को करने में उनका उत्साह बहुत ज़्यादा था। प्रकृति ने विद्रोह कर दिया। प्र-कृति — ने — वि-द्रोह किया।'

मैंने देखा कि डॉ. बॉयरस्टीन स्थानीय डॉक्टर को ध्यान से देख रहा था। अपनी आँखें उस पर टिकाए हुए वह बोला :

'दौरे एक ख़ास तरह से तीव्रता के थे, डॉ. विल्किन्स। मुझे अफ़सोस है कि आपने वे नहीं देखे। वे टैटनस के से ढंग के थे।'

डॉ. विल्किन्स बहुत समझदारी से बोले, 'ओह!'

डॉ. बॉयरस्टीन ने कहा, 'मैं आपसे अकेले में बात करना चाहूँगा।' फिर जॉन की तरफ़ मुड़कर पूछने लगा, 'तुम्हें एतराज़ तो नहीं होगा?'

'बिल्कुल नहीं।'

दोनों डॉक्टरों को अकेला छोड़कर हम गलियारे में निकल आये, मुझे अपने पीछे ताले में चाभी घूमने की आवाज़ आयी।

हम धीरे-धीरे सीढ़ियों से नीचे उतर गये। मैं बेहद उत्तेजित था। मुझमें नतीजे निकालने की एक प्रतिभा है, और डॉ. बॉयरस्टीन के व्यवहार ने मेरे मन में बेलगाम अन्दाजों का झुँड छोड़ दिया था। मेरी कैवेन्डिश का हाथ मेरी बाँह पर था।

'क्या बात है? डॉ. बॉयरस्टीन इतने अजीब क्यों लग रहे थे?' मैंने उसकी तरफ़ देखा।

'तुम जानती हो मैं क्या सोच रहा हूँ?'

'क्या?'

‘सुनो!’ मैंने चारों तरफ़ देखा, सब सुनने की सीमा से दूर थे। मैंने अपनी आवाज़ को फुसफुसाहट में बदल कर कहा ‘मेरा विश्वास है कि उन्हें ज़हर दिया गया। मैं निश्चित रूप से कह सकता हूँ कि डॉ. बॉयरस्टीन को भी यही शक़ है।’

‘क्या?’ वह दीवार के साथ चिपक गयी, आँखों की पुतलियाँ चौड़ी हो गयीं। फिर अचानक ऐसे चिल्लाई कि मैं चौंक उठा; वह चिल्लाई, ‘नहीं, नहीं — ऐसा नहीं — ऐसा नहीं।’ मुझसे हटकर सीढ़ियों पर भागती चली गयी। मैं उसके पीछे, मुझे डर था कि वह बेहोश न हो जाये। मैंने देखा वह रेलिंग पर टिकी हुई थी, रंग बिल्कुल फीका था। उसने बेचैनी से चले जाने का इशारा किया।

‘नहीं, नहीं — मुझे छोड़ दो। मैं अकेले रहना चाहती हूँ। मुझे कुछ देर सिर्फ़ चुप रहने दो। नीचे औरों के पास चले जाओ।’

मैंने अनिच्छा से उसकी बात मान ली। जॉन और लॉरेंस खाने वाले कमरे में थे। मैं उनके पास चला गया। हम सब चुप थे, पर मेरे ख़्याल से मैंने आख़िर में जब अपनी चुप्पी तोड़ते हुए पूछा ‘मि. इंग्लथोर्प कहाँ हैं?’ तब सभी के मन में वही प्रश्न था।

जॉन ने सिर हिलाया : ‘वह घर में नहीं हैं।’

हमारी नज़रें मिलीं। एल्फ्रेड इंग्लथोर्प था कहाँ? उसका घर में न होना अजीब और समझ से परे था। मुझे मिसेज़ इंग्लथोर्प के आख़िरी शब्द याद आये। उनके पीछे क्या था? अगर वे ज़िन्दा होतीं तो वे हमें और क्या बतातीं?

आख़िर हमें डॉक्टरों के सीढ़ियों से उतरने की आवाज़ सुनाई दी। डॉ. विल्किन्स उत्तेजित लग रहे थे। वे अपने भीतर के उल्लास को ओढ़ी हुई मर्यादित शान्ति से छिपा रहे थे। डॉ. बॉयरस्टीन पृष्ठभूमि में रह गए, उनका दाढ़ी वाला चेहरा ज्यों का त्यों गम्भीर था। डॉ. विल्किन्स दोनों की तरफ़ से बोल रहे थे। उन्होंने जॉन से कहा : ‘मि. कैवेन्डिश, मैं पोस्टमार्टम के लिए आपकी सहमति चाहूँगा।

जॉन ने गम्भीरता से पूछा, ‘क्या यह ज़रूरी है?’ उसके चेहरे पर दर्द की लहर दौड़ गयी।

डॉ. बॉयरस्टीन ने कहा, 'बिल्कुल।'

'तुम्हारा मतलब —?'

'क्योंकि इन परिस्थितियों में न डॉ. विल्किन्स, न मैं तुम्हें मौत का सर्टिफिकेट दे सकते हैं।'

जॉन ने सिर झुका लिया, 'ऐसा है तो मेरे पास राज़ी होने के अलावा कोई चारा नहीं है।'

डॉ. विल्किन्स फुर्ती से बोले, 'धन्यवाद। हमारा यह सुझाव है कि यह काम कल रात या बल्कि आज ही रात को हो जाये।' उन्होंने दिन की रोशनी को जाँचा। 'इस स्थिति में तहक़ीक़ात से बचा नहीं जा सकता — ये औपचारिकता ज़रूरी है, पर मैं प्रार्थना करता हूँ कि आप लोग अपने को दुखी मत करो।'

थोड़ी देर बाद डॉ. बॉयरस्टीन ने जेब से दो चाभियाँ निकालीं और जॉन को पकड़ा दीं।

'ये दोनों कमरों की चाभियाँ हैं। मैंने ताला लगा दिया है। मेरे ख़्याल में अभी इन्हें बन्द रखना ही बेहतर होगा।'

इसके बाद दोनों डॉक्टर चले गये।

मेरे दिमाग़ में एक विचार घूम रहा था, मुझे लगा कि अब समय आ गया था कि उस पर बात की जाये। फिर भी ऐसा करने में सकुचा रहा था। मैं जानता था कि जॉन को किसी भी तरह के प्रचार से ख़ौफ़ होता था; वह एक आरामपसन्द आशावादी था, जो परेशानी से ज़रा भी रू-ब-रू होना नहीं चाहता था। मेरे लिए उसे अपनी योजना के सही होने का निश्चय करवाना कठिन हो सकता था। दूसरी तरफ़ लॉरेंस कम रूढ़िवादी और ज़्यादा कल्पनाशील होने के कारण मुझे लगता था कि मेरा साथी हो सकता था। निस्सन्देह वह घड़ी आ गयी थी, जब मुझे पहल करनी चाहिए थी।

मैंने कहा, 'जॉन, मैं तुमसे कुछ पूछूँगा।'

'पूछो।'

'तुम्हें याद है मैंने तुमसे अपने बेल्जियन मित्र पॉयरो के बारे में बात की थी, जो आजकल यहाँ है? वह बहुत प्रसिद्ध जासूस है।'

'हाँ।'

'मैं चाहता हूँ कि तुम मुझे इस मामले की जाँच के लिए उसे बुला लेने दो।

'क्या — अब? पोस्टमार्टम से पहले?'

'हाँ, अगर कुछ गड़बड़ हुई है, तो समय मिलने से फ़ायदा रहता है।

लॉरेंस ग़ुस्से से चीख़ा, 'बकवास! मेरे ख़्याल से सब कुछ बॉयरस्टीन का फैलाया मायाजाल है। जब तक उसने यह ख़्याल विल्किन्स के दिमाग़ में नहीं डाला, तब तक उसने ऐसा कुछ नहीं सोचा था। बॉयरस्टीन भी सभी विशेषज्ञों की तरह झक्की है। ज़हर उसका शौक़ है, इसलिए, निश्चित है कि उसे हर जगह वही दिखता है।'

मैं स्वीकार करता हूँ कि लॉरेंस के इस व्यवहार ने मुझे ताज्जुब में डाल दिया। वह किसी बात को लेकर इतना तीखा कभी नहीं होता।

जॉन सकुचा गया। अन्त में बोला, 'लॉरेंस मैं तुम्हारी तरह नहीं सोच सकता। मैं हेस्टिंग्स को खुली छूट देना चाहूँगा। हालाँकि मुझे कुछ समय इन्तज़ार करना बेहतर लगेगा। हम बेकार की बदनामी नहीं चाहते।'

मैं आतुरता से चिल्लाया, 'नहीं, नहीं, तुम्हें इस बात की फ़िक्र नहीं करनी है। पॉयरो बहुत सावधान व्यक्ति है।'

'तो ठीक है, अपने तरीके से काम करो। मैं तुम्हारे हाथों में सब छोड़ता हूँ। हालाँकि अगर यह वैसा ही है जैसा हमारा शक़ है तो मामला काफ़ी साफ़ है। अगर मैं उसके साथ अन्याय कर रहा हूँ तो भगवान मुझे माफ़ करें।

मैंने अपनी घड़ी देखी। छ: बजे थे। मैंने समय गँवाना उचित न समझा।

पाँच मिनट की देरी मैंने भी की। मैंने वह वक़्त लाइब्रेरी खंगालने में लगाया, तब तक जब तक कि मुझे डॉक्टरी की वो किताब नहीं मिल गयी, जिसमें स्ट्रिकनीन ज़हर का ब्यौरा था।

चौथा अध्याय

पॉयरो की जाँच

गाँव के जिस घर में बेल्जियम के लोग रहते थे, वह पार्क के फाटक के काफ़ी पास था। लम्बी घास में से सँकरे रास्ते पर होकर जाने से चक्करदार घूम कर जाने का वक़्त बचाया जा सकता था। इसलिए मैं उसी रास्ते से गया। मैं लगभग घर तक पहुँच ही गया था, जब दौड़कर मेरी तरफ़ आते एक आदमी ने मेरा ध्यान खींचा। वह मि. इंग्लथोर्प था। वह कहाँ था? वह घर पर अपने न होने के बारे में क्या बताने की सोच रहा था?

उसने व्यग्रता से मुझे पुकारा।

'हे भगवान! यह तो बहुत बुरा हुआ। बेचारी मेरी पत्नी! मैंने अभी-अभी सुना है।'

मैंने पूछा, 'तुम कहाँ थे?'

‘कल रात डेन्बी ने मुझे देर करवा दी। काम पूरा होने तक रात के एक बज गये थे। तब मैंने देखा कि मैं दरवाज़े की चाभी लाना भूल गया था। किसी और को मैं जगाना नहीं चाहता था। डेन्बी ने मुझे सुला लिया।

मैंने फिर पूछा, ‘तुम्हें ख़बर कैसे मिली?’

‘विल्किन्स ने डेन्बी को बताने के लिए दरवाज़ा खटखटाया। बेचारी मेरी ऐमिली! वह इतने अच्छे चरित्र की थी, औरों के लिए त्याग करती रहती थी। वह अपनी ताक़त से ज़्यादा काम करती थी।’

मेरे मन में विरक्ति की लहर दौड़ गयी। यह आदमी कितना पक्का पाखण्डी था।

मैंने कहा, ‘मुझे जल्दी जाना है।’ शुक्र है उसने यह नहीं पूछा कि मैं कहाँ जा रहा हूँ।’

कुछ मिनटों में मैं लीस्टवेज कॉटेज के दरवाज़े को खटखटा रहा था।

कोई जवाब न मिलने पर मैंने अधीरता से दोबारा खटखटाया। मेरे सिर के ऊपर वाली खिड़की को सावधानी से खोला गया और पॉयरो ने ख़ुद बाहर झाँका।

वह मुझे देखकर ताज्जुब से चिल्लाया। मैंने संक्षेप में उसे उस त्रासदी की बात बतायी और यह भी कहा कि मुझे उसकी मदद की ज़रूरत थी।

‘रुको, दोस्त। मैं दरवाज़ा खोलता हूँ। जब तक मैं कपड़े बदलता हूँ, तुम इस मामले के बारे में फिर से बता देना।’

कुछ पलों में उसने दरवाज़ा खोला, और मैं उसके साथ ऊपर उसके कमरे में गया। वहाँ उसने मुझे एक कुर्सी पर बिठाया, मैंने कुछ भी नहीं छिपाया, महत्वहीन बातों को भी छोड़े बिना

पूरी कहानी सुना दी। इस बीच वह ख़ुद ध्यान से, बिना हड़बड़ी किये कपड़े पहनकर तैयार हो गया।

मैंने उसे अपने जागने, मिसेज़ इंग्लथोर्प के अन्तिम शब्दों, उनके पति की ग़ैरमौजूदगी, एक दिन पहले के झगड़ों, मेरे द्वारा सुने गये मेरी कैवेन्डिश और उसकी सास के बीच की बातचीत के टुकड़ों, उससे पहले मिसेज़ इंग्लथोर्प और ऐवेलिन हॉवर्ड के बीच की लड़ाई और ऐवेलिन के दिये इशारों के बारे में सब कुछ बता दिया।

मैं उतना स्पष्ट कतई नहीं था, जितना होना चाहता था। कई बार अपनी बात को दोहराता रहा, बीच में किसी भूले हुए ब्यौरे पर लौटता था। पॉयरो मुझे देखकर सदयता से मुस्कराता रहा।

'दिमाग़ गड़बड़ा रहा है? है न? समय ले लो, दोस्त। तुम परेशान हो; उत्तेजित हो — पर यह स्वाभाविक है। जैसे-जैसे हम शान्त होंगे, तो तथ्यों को व्यवस्थित कर सकेंगे, अच्छी तरह उनको सही जगह पर रख पायेंगे। उनकी जाँच करने के बाद अनावश्यक को हटा देंगे। जो महत्वपूर्ण हैं, उन्हें एक तरफ़ रख लेंगे, जो नहीं हैं, उन्हें उड़ा देंगे।' उसने अपना भोला चेहरा घुमाया और मज़ाकिया ढंग से फूँक मारकर बोला, 'उड़ा देंगे।'

मैंने एतराज़ करते हुए कहा, 'ये तो बहुत ठीक है, पर तुम यह कैसे तय करोगे कि क्या महत्वपूर्ण है और क्या नहीं? मुझे हमेशा यही मुश्किल लगता है।'

पॉयरो ने बड़ी ऊर्जा के साथ सिर हिलाया। अब वह बहुत ध्यान से अपनी मूँछें ठीक कर रहा था।

'ऐसा नहीं है। एक तथ्य दूसरे तक ले जाता है — और हम बढ़ते जाते हैं। क्या अगला तथ्य उसमें जुड़ रहा है? बढ़िया! अच्छा है! हम आगे बढ़ सकते हैं। यह छोटा-सा तथ्य — नहीं। ओह, यह विचित्र है! इसमें कुछ छूट रहा है —ृंखला की एक कड़ी यहाँ नहीं है। हम परीक्षण करते हैं। ढूँढ़ते हैं और वह छोटा-सा, विचित्र तथ्य, वह छोटा-सा तुच्छ तथ्य जो शायद मेल भी नहीं खा रहा, हम उसे यहाँ रखते हैं।' उसने अपने हाथ से बढ़ा-चढ़ा कर इशारा किया। 'यह तो महत्वपूर्ण है। यह तो बहुत महत्वपूर्ण है।'

...

‘हाँ—’

‘अहा!’ पॉयरो ने अपनी तर्जनी इतनी तेज़ी से मेरी तरफ़ हिलाई कि मैं उसके सामने दुबक गया। ‘सावधान! उस जासूस के लिए ख़तरा है जो यह कहता है ‘‘यह बहुत छोटा है — इससे कोई फ़ायदा नहीं है। यह सही नहीं होगा। मैं इसे भूल जाता हूँ।’’ उसी में गड़बड़ है। हर चीज़ से फ़र्क पड़ता है।’

‘मैं जानता हूँ। तुमने मुझसे हमेशा यही कहा है। इसीलिए मैं इस मामले के हर विवरण तक गया हूँ, चाहे वह मुझे इससे जुड़ा हुआ लगा या नहीं।’

‘और मैं तुमसे सन्तुष्ट हूँ। तुम्हारी याददाश्त अच्छी है, और तुमने मुझे ईमानदारी के साथ सारे तथ्य दिये हैं। जिस क्रम में तुमने उन्हें दिया है उसके बारे में कुछ नहीं कहूँगा — सच कहूँ तो वह खेदपूर्ण है। पर इतनी छूट मैं देता हूँ। तुम परेशान हो। परिस्थिति के कारण तुमने एक बेहद महत्वपूर्ण तथ्य छोड़ दिया है।

‘वह क्या है?’

‘तुमने मुझे यह नहीं बताया कि कल रात मिसेज़ इंग्लथोर्प ने खाना ठीक से खाया था या नहीं।

मैंने उसे घूर कर देखा। युद्ध ने निश्चित रूप से इस छोटे आदमी के दिमाग़ को प्रभावित किया था। वह बड़े ध्यान से पहनने से पहले अपने कोट को साफ़ करने में लगा हुआ था। ऐसा लग रहा था जैसे वह उस काम में पूरी तरह डूबा हुआ था।

मैं बोला, ‘मैंने नहीं देखा। वैसे भी मैं देखता नहीं हूँ—’

‘तुम देखते नहीं? पर वह पहले महत्वपूर्ण है।’

मैं थोड़ा चिढ़ कर बोला, 'कैसे, यह मैं नहीं जानता। जहाँ तक मुझे याद है, उन्होंने ज़्यादा नहीं खाया था। वह परेशान दिख रही थीं; इससे उनकी भूख उड़ गयी थी। वह स्वाभाविक ही था।'

पॉयरो सोचते हुए बोला, 'हाँ, वह तो स्वाभाविक था।'

उसने एक दराज़ खोली, एक छोटा बक्सा निकाला, फिर मेरी तरफ़ मुड़ा।

'अब मैं तैयार हूँ। हम उस घर की तरफ़ चलते हैं, और पहुँचकर जगह पर मामले की जाँच-पड़ताल करेंगे। माफ़ करना दोस्त, तुम जल्दी में तैयार हुए होगे। तुम्हारी टाई एक तरफ़ है।' फिर उसने कुशलतापूर्वक उसे ठीक कर दिया।

'अब चलें?'

हम जल्दी से गाँव तक जाकर भवन के फाटक में मुड़ गये। पॉयरो पल भर को रुका, दुखी भाव से बगीचे के ख़ूबसूरत विस्तार को देखा जो अब भी सुबह की ओस से चमक रहा था।

'इतना सुन्दर, इतना सुन्दर, फिर भी बेचारा परिवार दुख में डूबा, दर्द से बेहाल है।'

बोलते समय वह गहराई से मुझे देख रहा था, और मैं जानता था कि उसके देर तक घूरने की वजह से मैं लाल हो गया था।

क्या परिवार दर्द से बेहाल था? क्या मिसेज़ इंग्लथोर्प की मृत्यु का दुख इतना बड़ा था? मैंने अनुभव किया कि वहाँ के माहौल में भावनाओं की कमी थी। मृत महिला में दूसरों से प्यार का उपहार पाने की क्षमता नहीं थी। उसकी मृत्यु एक सदमा और परेशानी दे रही थी, पर उनके न होने का किसी को अधिक दुख नहीं होगा।

ऐसा लगा जैसे पॉयरो मेरे विचारों को समझ रहा था। उसने गम्भीरता से सिर हिलाया।

वह बोला, 'नहीं तुम सही हो, ऐसा नहीं है कि उनका किसी से ख़ून का रिश्ता था। वे इन कैवेन्डिशों के प्रति उदार और दयालु थीं, पर वे उनकी अपनी माँ नहीं थीं। ख़ून बोलता है — हमेशा याद रखो, ख़ून बोलता है।'

मैंने कहा, 'पॉयरो, मैं चाहता था तुम मुझे यह बताओ कि मिसेज़ इंग्लथोर्प ने रात का खाना अच्छी तरह खाया या नहीं, यह तुम क्यों जानना चाहते थे। मेरे दिमाग़ में यह बात घूम रही है, पर मैं यह नहीं समझ पा रहा कि इसका इस मामले से क्या ताल्लुक है।'

हम दोनों चल रहे थे, वह कुछ मिनट तो चुप रहा, पर अन्त में बोला, 'मुझे तुम्हें बताने में कोई दिक्कत नहीं है — हालाँकि तुम जानते ही हो, मेरी आदत है कि काम पूरा होने से पहले कुछ न बताऊँ। इस वक़्त यह दावा किया जा रहा है कि उनकी मृत्यु स्ट्रिकनीन ज़हर से हुई है। वह शायद उन्हें कॉफ़ी में दिया गया था।'

'हाँ।'

'कॉफ़ी किस वक़्त दी गयी थी?'

'आठ बजे के करीब।'

'इसलिए उन्होंने उस वक़्त से साढ़े आठ के बीच पी होगी — उसके बाद ज़रूर नहीं। स्ट्रिकनीन तेज़ी से असर करने वाला ज़हर है। इसका प्रभाव जल्दी महसूस किया जाना चाहिए था, लगभग एक घण्टे में। जबकि मिसेज़ इंग्लथोर्प के मामले में लक्षण अगले दिन सुबह पाँच बजे तक नहीं दिखे। नौ घण्टे। अगर खाना अच्छी तरह खाया जाये और उसी वक़्त ज़हर भी लिया जाये तो उसका प्रभाव कम और देर में होता है, फिर भी इतनी देर मुश्किल थी। पर इस सम्भावना को ध्यान में रखना चाहिए। तुम्हारे अनुसार उन्होंने बहुत कम खाना खाया था, अगली सुबह भी लक्षण जल्दी नहीं दिखे। अब यह एक अजीब स्थिति है, दोस्त! हो सकता है कि शव परीक्षण के बाद कुछ ऐसा निकले जिससे कोई जानकारी मिले। इस बीच, याद रखना!'

जब हम घर के पास पहुँचे, तब जॉन बाहर आया और हमसे मिला। उसका चेहरा थका हुआ और मरियल-सा लगा।

वह कहने लगा, 'मि. पॉयरो, यह बहुत डरावना झमेला है। हेस्टिंग्स ने आपको बता दिया होगा कि हम कोई प्रचार नहीं चाहते?'

'मैं पूरी तरह समझ गया हूँ।'

'देखिए। अब तक शक़ का ही मामला है। हमारे पास आगे बढ़ने के लिए कुछ नहीं है।'

'बिल्कुल ठीक! सिर्फ़ सावधानी का मसला है।'

जॉन मेरी तरफ़ मुड़ा, उसने अपना सिगरेट का डिब्बा निकाला और एक सिगरेट निकालकर जलाई।

'तुम जानते हो, वह आदमी इंग्लथोर्प लौट आया है?'

'हाँ। मैं उससे मिला था।'

जॉन ने माचिस की तीली पास की क्यारी में फेंक दी, पॉयरो की भावनाओं के लिए यह हरकत बहुत अधिक थी। उसने तीली उठाई, और सफ़ाई से दबा दी।

'यह जानना काफ़ी मुश्किल है कि उसके साथ कैसा बर्ताव किया जाये।'

पॉयरो ने धीरे से कहा, 'यह मुश्किल ज़्यादा देर नहीं रहेगी।'

जॉन दुविधा में दिखा, क्योंकि वह इस रहस्यमय कथन का अर्थ नहीं समझ पाया था। उसने डॉ. बॉयरस्टीन की दी हुई दोनों चाभियाँ मुझे पकड़ा दीं।

‘मि. पॉयरो जो कुछ देखना चाहें, उन्हें वह सब दिखा दो।’

पॉयरो ने पूछा, ‘क्या कमरों में ताला लगा है?’

‘डॉ. बॉयरस्टीन ने यही सलाह दी थी।’

पॉयरो ने सोचते हुए सिर हिलाया।

‘तब तो वे ज़रूर यही मानते हैं। इससे हमारे लिए काम आसान हो जाता है।’

हम दोनों दुर्घटना वाले कमरे में साथ-साथ गये। सुविधा के लिए मैं कमरे और उसमें मौजूद प्रमुख चीज़ों और मेज़-कुर्सी की स्थिति का नक्शा साथ लगा रहा हूँ।